सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_Sanjay YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 8 ● अंक: 39 ● पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, शुक्रवार, 11 मार्च, 2022
मूल्य ₹ 3/-

यदि आप एक बार अपने साथी नागरिकों का भरोसा तोड़ दें, तो आप फिर कभी उनका सत्कार और सम्मान नहीं पा सकेंगे।

-अब्राहम लिंकन

2024 में आएंगे असली नतीजे... 8 | निकलेगा विजय जुलूस, चुनाव आयोग... 3 | सपा ने बनाया रिकार्ड, पहली बार... 7

अब सरकार गठन की कवायद दिल्ली दरबार के इशारे का इंतजार

प्रदेश के भाजपा नेताओं को आज बुलाया जा सकता है दिल्ली

» कैबिनेट में सहयोगी दलों के कुछ विधायकों को भी किया जा सकता है शामिल

» उपमुख्यमंत्री का नाम तय कर सकता है केंद्रीय नेतृत्व, कैबिनेट बैठक आज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव में लगातार दूसरी बार प्रचंड बहुमत मिलने से गदगद भाजपा नेतृत्व ने अब नयी सरकार के गठन की कवायद तेज कर दी है। प्रदेश में भाजपा की नई सरकार के मंत्रिमंडल के सदस्यों पर दिल्ली में मुहर लगेगी। लिहाजा प्रदेश भाजपा नेतृत्व को दिल्ली दरबार के इशारे का इंतजार है। सूत्रों के मुताबिक दिल्ली दरबार का इशारा मिलते ही कोर कमेटी के सभी सदस्य आज दिल्ली जा सकते हैं। प्रदेश में उपमुख्यमंत्री बनाए जाएंगे या नहीं, यह भी दिल्ली में तय होगा। वहीं भाजपा अपने गठबंधन साथियों के कुछ विधायकों को मंत्रिमंडल में शामिल कर सकती है।

विधान सभा चुनाव के नतीजों में प्रचंड बहुमत मिलने के बाद दिल्ली में भाजपा के शीर्ष नेताओं और आरएसएस के बीच यूपी में भाजपा की नई सरकार के गठन को लेकर बातचीत शुरू हो गई है। पार्टी सूत्रों के मुताबिक मंत्रिमंडल के नए सदस्यों के नामों पर भाजपा और आरएसएस के वरिष्ठ पदाधिकारियों की सहमति से ही मुहर लगेगी। प्रदेश सरकार के नए मंत्रिमंडल में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह, आगरा ग्रामीण से नवनिर्वाचित विधायक और उत्तराखंड की पूर्व राज्यपाल बेबीरानी मौर्य, कन्नौज से नवनिर्वाचित विधायक और पूर्व एडीजी असीम अरुण और सरोजनीनगर से नवनिर्वाचित विधायक राजेश्वर सिंह को अहम जिम्मेदारी दी जा सकती है। भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष एवं एमएलसी अरविंद कुमार शर्मा को भी मंत्रिमंडल में शामिल किया जा सकता है। इसके अलावा प्रदेश सरकार के मंत्रिमंडल में निषाद पार्टी के अध्यक्ष संजय निषाद के साथ अपना दल के विधायकों को भी जगह मिल सकती है। माना जा रहा है कि दोनों सहयोगी दलों से एक से दो मंत्री भी बनाए जा सकते है। वहीं सिराथू विधान सभा सीट से लड़े उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य चुनाव हार चुके हैं जबकि उपमुख्यमंत्री डा.दिनेश शर्मा चुनाव नहीं लड़े हैं। ऐसे में संभावना है कि अब उपमुख्यमंत्री के लिए नए चेहरे तलाशे जाएं और इसका निर्णय दिल्ली दरबार कर सकता है।

मंत्रिमंडल गठन में क्षेत्रीय और जातीय समीकरण पर भी रहेगा फोकस

लखनऊ। मंत्रिमंडल के गठन में क्षेत्रीय तथा जातीय संतुलन साधने पर भी फोकस रहेगा। इस बार चुनाव में उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के साथ 11 मंत्री चुनाव हारे हैं। इनकी खाली जगह भरने के लिए भाजपा मंत्रिमंडल में जातीय व क्षेत्रीय समीकरण साधकर नए चेहरों को जगह दे सकती है। यह तय है कि मंत्रिमंडल के सहारे भाजपा 2024 के लिए रणनीति की चौसर सजाएगी। अटकलें यह भी हैं कि डा. दिनेश शर्मा को संगठन का जिम्मा सौंपा जा सकता है। लोक सभा चुनाव के मद्देनजर ब्राह्मण को प्रदेश संगठन सौंपने के प्रयोग भाजपा पहले भी कर चुकी है। 2014 में इस पद पर डा. लक्ष्मीकांत बाजपेयी को बैठाया गया तो 2019 के लोक सभा चुनाव से पहले डा. महेंद्र नाथ पांडेय प्रदेश अध्यक्ष बनाए गए। दिनेश शर्मा को संगठन का लंबा अनुभव है। वे राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रह चुके हैं और ब्राह्मणों ने भाजपा को भरपूर वोट भी दिया है।

भाजपा विधायक दल चुनेगा अपना नेता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में पांच वर्ष का कार्यकाल पूरा करने वाले भाजपा के पहले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ 18वीं विधान सभा के गठन से पहले अपना इस्तीफा देंगे। उत्तर प्रदेश में लगातार दूसरी बार प्रचंड बहुमत मिलने के बाद भाजपा अब सरकार बनाने की तैयारी में लग गई है। योगी आदित्यनाथ सरकार का कार्यकाल 15 मार्च तक है। माना जा रहा है कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पहले अपने पद से इस्तीफा देंगे। इसके बाद प्रदेश में केयरटेकर सरकार काम करेगी। वह अपने सरकारी आवास पर हैं। इसी दौरान आज अपना दल (सोनेलाल) की मुखिया अनुप्रिया पटेल मुख्यमंत्री के सरकारी आवास पहुंचीं और सीएम योगी आदित्यनाथ से मुलाकात की। उनकी पार्टी के 12 विधायक जीते हैं। दिल्ली दरबार से इशारे के बाद लखनऊ में भाजपा विधायक दल की बैठक होगी। इस बैठक में विधायक दल का नेता चुना जाएगा। यह नेता ही मुख्यमंत्री पद की शपथ लेगा। मुख्यमंत्री के साथ ही अन्य मंत्री भी शपथ लेंगे। इसके बाद उत्तर प्रदेश में नई सरकार काम प्रारंभ करेगी। वहीं आज शाम प्रदेश कैबिनेट की बैठक है।

दूर हो गया भाजपा का आधे से ज्यादा भ्रम: अखिलेश

» हमने दिखा दिया कि घटाया जा सकता है भाजपा की सीटों को

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के विधान सभा चुनाव में भाजपा को स्पष्ट बहुमत मिलने के बाद आज सपा प्रमुख अखिलेश यादव की प्रतिक्रिया आई है। उन्होंने कहा कि भाजपा का आधे से ज्यादा भ्रम दूर हो गया है।

अखिलेश यादव ने आज ट्वीट किया। सपा मुखिया ने कहा कि उत्तर प्रदेश की जनता को हमारी सीटें ढाई गुनी व मत प्रतिशत डेढ़ गुना बढ़ाने के लिए हार्दिक धन्यवाद। हमने दिखा दिया है कि उत्तर प्रदेश में भाजपा की सीटों को घटाया जा सकता है। अब भाजपा का यह घटाव निरंतर जारी रहेगा। उनका आधे से ज्यादा भ्रम और छलावा दूर हो गया है बाकी कुछ दिनों में हो जाएगा। जनहित का संघर्ष जीतेगा। एक अन्य ट्वीट में अखिलेश ने लिखा, सपा-गठबंधन के जीते हुए सभी विधायकों को हार्दिक बधाई। सभी नए विधायक जनता की सेवा व सहायता करने की जिम्मेदारी शत-प्रतिशत निभाएं। उस हर एक छात्र, बेरोजगार युवा, शिक्षक, शिक्षामित्र, महिला, पुरानी पेंशन के समर्थक, किसान, मजदूर और प्रोफेशनल को धन्यवाद जिसने हममें विश्वास जताया।

जनता को समर्थन देने के लिए दिया धन्यवाद

इससे पहले कल अखिलेश यादव ने मतगणना से पहले कहा था कि इम्तिहान बाकी है अभी हौसलों का वक्त आ गया है। अब फैसलों का। मतगणना केंद्रों पर दिन-रात सतर्क और सचेत रूप से सक्रिय रहने के लिए सपा-गठबंधन के हर एक कार्यकर्ता, समर्थक, नेतागण, पदाधिकारी और शुभचिंतक को हृदय से धन्यवाद। लोकतंत्र के सिपाही जीत का प्रमाणपत्र लेकर ही लौटें। गौरतलब है कि सपा छोटे दलों के साथ गठबंधन कर मैदान में उतरी थी।

बसपा से हुई भूल, बदलेंगे रणनीति: मायावती

» चुनाव परिणामों से लेंगे सबक

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव के परिणाम आने के बाद बसपा प्रमुख मायावती ने कहा कि बसपा की उम्मीद के विपरीत नतीजे आए हैं लेकिन उससे पार्टी के नेता तथा कार्यकर्ता को घबराना नहीं है। सही कारणों को समझकर और सबक सीखकर हमें अपनी पार्टी को आगे बढ़ाना है। चुनाव परिणाम आगे के लिए सबक हैं। बसपा के बारे में गलत प्रचार हुआ है। सभी इससे सजग रहें।

उन्होंने कहा कि इस बार के चुनाव में मुस्लिमों से भारी भूल हुई है क्योंकि उन्होंने भाजपा को रोकने के लिए सपा को वोट दिया और इसकी सजा बसपा को मिल गई। उसी तरह विभिन्न समाज का वोटर इसलिए भाजपा की तरफ शिफ्ट हो गया कि कहीं सपा की सरकार न आ जाए और फिर से जंगलराज कायम न हो जाए। उन्होंने कहा कि मुस्लिम जो बसपा पर भरोसा करते रहे हैं इस बार उनसे भूल हो गई। बसपा से भी भूल हुई। बसपा आगे अपनी रणनीति बदलेगी। पार्टी और उसके मूवमेंट को फिर आगे बढ़ाना है।

सिराथू में संघर्षपूर्ण लड़ाई में हारे केशव मौर्य स्वामी प्रसाद भी नहीं बचा पाए अपनी सीट

» लखीमपुर सहित 23 जिलों में भाजपा का क्लीन स्वीप

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 2022 में भाजपा ने एक बार फिर प्रचंड बहुमत के साथ जीत हासिल कर ली है। विपक्ष के तमाम दावों से उलट भाजपा गठबंधन की पूर्ण बहुमत के साथ सत्ता में वापसी हो गई। भाजपा गठबंधन का 273 सीटों पर कब्जा हो गया है जबकि सपा गठबंधन 125 पर सिमटा गया है। वहीं कांग्रेस के खाते में दो और बसपा को एक सीट मिली है। प्रदेश में भाजपा गठबंधन की आंधी चली, लेकिन प्रदेश सरकार में उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य अपने गृह जनपद में हार गए।

वर्ष 2017 के विधानसभा चुनाव में भाजपा की बड़ी जीत में बड़ी भूमिका निभाकर उप मुख्यमंत्री बने केशव वर्ष 2022 के चुनाव में अपना घर नहीं बचा सके। वहीं गोरखपुर से चिल्लूपार से भाजपा के राजेश त्रिपाठी, बांसगांव से विमलेश पासवान, खजनी से श्रीराम चौहान, सहजनवा से प्रदीप शुक्ला, गोरखपुर ग्रामीण से विपिन सिंह, गोरखपुर शहर से सीएम योगी आदित्यनाथ, कैम्पियरगंज से फतेह बहादुर सिंह, पिपराइच से महेन्द्र पाल सिंह तथा चौरीचौरा से श्रवण कुमार निषाद जीते। वाराणसी मे भी भाजपा ने सभी सीट पर जीत दर्ज की है। गोंडा की सात तथा हरदोई में भाजपा ने आठों विधानसभा सीट पर विजय पताका फहराई है। लखीमपुर में भाजपा ने प्रदर्शन दोहराते हुए सभी आठों सीटों पर जीत दर्ज की। झांसी में भाजपा ने सदर, बबीना, गरौठा तथा मऊरानीपुर सीट पर जीत दर्ज की है।

भाजपा छोड़कर सपा में जाने वाले स्वामी प्रसाद मौर्य तथा धर्म सिंह सैनी ने गंवाई अपनी सीट

विधानसभा चुनाव की तरीख की घोषणा होते ही पाला बदलने वाले योगी आदित्यनाथ सरकार में कैबिनेट मंत्री रहे स्वामी प्रसाद मौर्य के साथ धर्म सिंह सैनी को हार झेलनी पड़ी है। प्रदेश में अपने को कद्दावर नेता बताने वाले इन दोनों नेताओं को भाजपा प्रत्याशियों ने शिकस्त दी। कुशीनगर जिले के फाजिलनगर से भाजपा के प्रत्याशी सुरेंद्र कुशवाहा ने समाजवादी पार्टी के स्वामी प्रसाद मौर्य को 36 हजार से अधिक वोट से हराया। भाजपा छोड़ने के बाद भाजपा को सांप और खुद को नेवला बताने वाले स्वामी प्रसाद मौर्य ने कहा था कि नाग रूपी आरएसएस और सांप रूपी भाजपा को स्वामी रूपी नेवला यूपी से खत्म करके ही दम लेगा। सहारनपुर के नकुड़ से भाजपा प्रत्याशी मुकेश चौधरी ने समाजवादी पार्टी के डॉ. धर्म सिंह सैनी को पराजित किया। यहां पर बसपा के साहिल तीसरे स्थान पर रहे। सहारनपुर में पांच सीट में तीन पर भाजपा तथा दो में सपा गठबंधन के प्रत्याशी जीते हैं। गंगोह से भाजपा प्रत्याशी कीरत चौधरी तथा देवबंद से भाजपा प्रत्याशी कुंवर बृजेश सिंह जीते हैं। बेहट से गठबंधन प्रत्याशी उमर अली खान तथा सहारनपुर देहात से गठबंधन के आशु मलिक जीते हैं।

मैनपुरी के करहल से अखिलेश यादव की रिकार्ड जीत

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने मैनपुरी के करहल में रिकार्ड जीत दर्ज की है। पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव पहली बार विधानसभा का चुनाव लड़े और केन्द्रीय मंत्री भाजपा प्रत्याशी प्रोफेसर एसपी सिंह बघेल को शिकस्त दी। करहल विधानसभा सीट पर अखिलेश यादव ने 66782 मत के अंतर से जीत हासिल की है। यह जिले के विधानसभा चुनावों के इतिहास की सबसे बड़ी जीत है। इससे पहले 2017 के चुनाव में सपा के सोबरन सिंह यादव के नाम 38405 वोटों के अंतर से जीत का रिकार्ड था। सपा मुखिया अखिलेश यादव को चुनाव में 147237 वोट मिले, जबकि उनके निकटतम प्रतिद्वंदी एसपी सिंह बघेल को 80455 वोट हासिल हुए।

कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष लल्लू तीसरे स्थान पर

कुशीनगर की तमकुहीराज सीट पर कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष अजय कुमार लल्लू तीसरे स्थान पर रहे। यहां भाजपा प्रत्याशी असीम कुमार राय ने उन्हें हराया। यही नहीं लल्लू के क्षेत्र में ज्यादातर गांवों का वोट भाजपा के पक्ष में गिरा। बताया जा रहा है कि क्षेत्र में दौरा न करने के चलते जनता कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष लल्लू से नाराज थी।

नोएडा से पंकज सिंह रिकार्ड मतों से जीते

भाजपा ने गौतमबुद्धनगर में क्लीन स्वीप किया है। भाजपा ने यहां की तीनों सीट पर जीत दर्ज की है। साथ ही भाजपा के नोएडा से प्रत्याशी पंकज सिंह ने रिकार्ड वोट से जीत दर्ज की है। गौतमबुद्धनगर के दादरी से भाजपा के तेजपाल नागर, जेवर से धीरेंद्र ठाकुर तथा नोएडा से भाजपा प्रत्याशी पंकज सिंह ने जीत दर्ज की है। नोएडा से रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के पुत्र और भाजपा के मौजूदा विधायक पंकज सिंह ने सपा-रालोद गठबंधन के सुनील चौधरी, कांग्रेस की पंखुड़ी पाठक और बसपा के कृपाराम शर्मा को टिकने ही नहीं दिया। पंकज सिंह ने ऐतिहासिक जीत दर्ज की है। वह एक लाख 80 हजार वोट से जीते हैं। पंकज सिंह ने अजित पवार की एक लाख 65 हजार वोट से जीत के रिकार्ड को तोड़ा है। 2017 में भी इस सीट पर निर्वाचित हुए पंकज सिंह को कुल एक लाख 62 हजार 417 वोट मिले थे। सपा के सुनील चौधरी को 58 हजार 401 वोट मिले थे।

आजमगढ़ और गाजीपुर में दौड़ी साइकिल

» वाराणसी, मीरजापुर और सोनभद्र में खिला कमल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी चुनाव के नतीजों में आजमगढ़ और गाजीपुर में साइकिल दौड़ी, यहां भाजपा चारों खाने चित हो गईं। पूर्वांचल की 61 विधानसभाओं के लिए मतदाताओं ने बलिया जिले में छठवें चरण में सात सीटों के लिए तीन मार्च और वाराणसी, सोनभद्र, मऊ, गाजीपुर, आजमगढ़, जौनपुर, मीरजापुर, भदोही और चंदौली में सातवें व अंतिम चरण के लिए 54 सीटों पर मतदान हुआ था। वहीं बलिया के दोनों मंत्री जहां दोपहर तक पीछे रहे।

जबकि मल्हनी से धनंजय और लकी यादव के बीच जंग चलती रही। दूसरी ओर मऊ सदर से अब्बास अंसारी और भाजपा के अशोक सिंह के बीच घमासान चलता रहा। जबकि गाजीपुर की जहूराबाद-377 पर सुभासपा के ओमप्रकाश राजभर,

जखनियां -373 में सुभासपा-सपा के बेदी राम, मुहम्मदाबाद-378 में सपा के सुहेब अंसारी जंगीपुर-376 में सपा के वीरेंद्र यादव, सैदपुर 374 में सपा के अंकित भारती, जमानियां -379 में सपा के ओमप्रकाश सिंह, गाजीपुर सदर -375 में सपा के जयकिशन साहू को जीत मिली है। इस प्रकार गाजीपुर में सपा के पास सभी सीटें गईं। आजमगढ़ में सभी 10 सीटों पर जीत दर्ज कर सपा ने जीत का रिकार्ड बनाया है। अतरौलिया विधानसभा सीट पर सपा के डा. संग्राम यादव, गोपालपुर में सपा के नफीस अहमद, सगड़ी में सपा के एचएन पटेल, मुबारकपुर में सपा के अखिलेश यादव, आजमगढ़ सदर सीट पर सपा के दुर्गा प्रसाद यादव, निजामाबाद विधानसभा सीट पर सपा के आलमबदी, फूलपुर-पवई में रमाकांत यादव, दीदारगंज में सपा के कमलाकांत राजभर, लालगंज (सुरक्षित) में सपा के बेचई सरोज, मेंहनगर (सुरक्षित) सीट पर सपा की पूजा सरोज ने जीत हासिल की है।

धामी के हार जाने के बाद अब दिल्ली में तय होगा उत्तराखंड के मुख्यमंत्री का नाम

» सीएम पुष्कर धामी की हार से प्रदेश नेतृत्व पर उठे सवाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तराखंड में बीजेपी पश्चिम बंगाल मोमेंट का शिकार हो गई। भारतीय जनता पार्टी ने एंटी इंकमबेंसी फैक्टर को धता बताते हुए इस राज्य में शानदार वापसी की है, लेकिन सीएम पुष्कर सिंह धामी अपना चुनाव हार गए। ठीक ऐसा ही 2021 में बंगाल में हुआ था जब ममता बनर्जी की पार्टी टीएमसी बंगाल में शानदार विजय हासिल की थी, लेकिन नंदीग्राम से ममता बनर्जी चुनाव हार गई थीं।

अब उत्तराखंड में बीजेपी के साथ यही कहानी रिपीट हो गई कि बीजेपी राज्य में लगातार दूसरी बार सत्ता में आई लेकिन सीएम पुष्कर सिंह धामी उस मिथक को तोड़ने में नाकामयाब रहे, जिसके लिए उत्तराखंड जाना जाता है। पहले भुवन चंद्र खंडूरी, फिर हरीश रावत और अब पुष्कर सिंह धामी भी मुख्यमंत्री रहते चुनाव हार गए। सीएम पुष्कर सिंह धामी उत्तराखंड की खटीमा सीट से चुनाव हार गए हैं, उन्हें कांग्रेस प्रत्याशी भुवन कापड़ी ने लगभग 6000 वोटों से हराया है। 70 सीटों वाली उत्तराखंड विधानसभा में बीजेपी ने 47 सीटें जीती है।

बामुलाहिजा
कार्टून: हसन जैदी

जीत की हैट्रिक बनाकर पिता के बराबर पहुंचे टंडन

» गोपाल टंडन चौदहवें ऐसे विधायक हैं जिनके नाम यह विशेष उपलब्धि

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। नगर विकास मंत्री आशुतोष टंडन ने जीत के साथ ही अपने पिता लालजी टंडन की बराबरी भी हासिल कर ली। आशुतोष टंडन के पिता भाजपा के दिग्गज नेता लालजी टंडन इससे पहले विधानसभा चुनावों में तीन बार जीत हासिल कर चुके थे। गोपाल टंडन चौदहवें ऐसे विधायक हैं जिनके नाम पर यह विशेष उपलब्धि है। राजधानी में अगर चुनाव में सबसे अधिक बार जीत दर्ज करने की बात करें तो इसमें सबसे आगे नाम कांग्रेस के रामपाल त्रिवेदी, विजय कुमार त्रिपाठी और जनता पार्टी व सपा के संत बख्श रावत के नाम हैं जिन्होंने पांच-पांच बार जीत दर्ज की है।

हैट्रिक लगाने वाले

गोपाल टंडन भाजपा -	पूर्वी क्षेत्र-2014, 2017, 2022
लालजी टंडन भाजपा -	पश्चिम - 1996, 2002, 2007
प्रेमवती तिवारी कांग्रेस -	कैंट -1980, 1985 और 1989
शारदा प्रताप शुक्ला सपा -	सरोजनीनगर - 1985, 1989, 2012
गोमती यादव, भाजपा-सपा -	बीकेटी - 1991, 96 और 2012
राम कुमार शुक्ला भाजपा -	पश्चिम - 1989, 1991 और 1993 चार बार जीत दर्ज करने वाले
स्वरूप कुमार बख्शी, कांग्रेस -	पूर्व - 1974, 1977, 1980 और 1985
सुरेश श्रीवास्तव भाजपा -	पश्चिम-1996, 2000, 2007, 2017
सुरेश तिवारी भाजपा -	कैंट 1996, 2000, 2007, 2017 पांच बार जीत दर्ज करने वाले
रामपाल त्रिवेदी कांग्रेस -	मलिहाबाद 1957 और 1962, महोना 1967, 1969, 1974
विजय कुमार त्रिपाठी कांग्रेस -	सरोजनीनगर 1962, 1967, 1974, 1980 और 1991
संत बख्श रावत सपा, जनता दल -	मोहनलालगंज 1977, 1980, 1989, 1991 और 1993।

निकलेगा विजय जुलूस, चुनाव आयोग ने हटाया प्रतिबंध

कोरोना संक्रमण में आयी कमी को देखते हुए लिया गया फैसला

जारी की नई गाइडलाइन, जिला प्रशासन नियमों में देगा ढील

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। पांच राज्यों के चुनाव परिणाम आ गए हैं। राहत की बात यह है कि जीत दर्ज करने वाले प्रत्याशी अब विजय जुलूस निकाल सकेंगे। कोरोना को देखते हुए विजय जुलूस पर निर्वाचन आयोग ने प्रतिबंध हटा दिया है। इससे समर्थकों में खुशी की लहर है।

यूपी, उत्तराखंड और मणिपुर में भाजपा ने प्रचंड जीत दर्ज की। पंजाब में आम आदमी पार्टी की सरकार बननी तय है। गोवा में भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। जीत से समथकों में खुशी की लहर है और वे लगातार जश्न मना रहे हैं। इस खुशी को निर्वाचन आयोग ने और बढ़ा दिया है। पांच राज्यों के विधान सभा चुनाव की मतगणना के बाद विजय जुलूस निकालने पर लगे प्रतिबंध को हटा दिया है। आयोग ने अपने बयान में कहा कि जिन राज्यों में विधान सभा चुनाव हुए हैं, वहां कोरोना महामारी की मौजूदा स्थिति को देखते हुए यह फैसला किया गया है कि मतगणना के दौरान और बाद में विजय जुलूस निकालने से संबंधित दिशा-निर्देशों में राहत दी जाए और विजय जुलूस निकालने पर लगा प्रतिबंध पूरी तरह हटा लिया जाए। गौरतलब है कि उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, गोवा और मणिपुर के विधानसभा चुनावों के कार्यक्रम की घोषणा करते हुए निर्वाचन आयोग ने विजय जुलूस निकालने समेत चुनाव से जुड़े कई पहलुओं पर पाबंदी लगाई थी। आयोग ने बयान में कहा है कि कोविड से जुड़े हालात में सुधार होने के मद्देनजर निर्वाचन आयोग ने स्वास्थ्य मंत्रालय और राज्य सरकारों के साथ विचार-विमर्श करते हुए चुनाव के संदर्भ में नियमों में धीरे-धीरे ढील दी है। आगे आयोग ने कहा कि नियमों में ढील राज्य आपदा प्रबंधन संस्थाओं के दिशा-निर्देशों और जिला प्रशासन द्वारा लागू एहतियाती कदमों से संबंधित होगी।

लखनऊ के मोहनलालगंज में टूटा 71 सालों का रिकार्ड, खिला कमल

लखनऊ। भाजपा ने मोहनलालगंज सीट पर ऐतिहासिक सीट दर्ज की है। 2017 की मोदी लहर में भी इस सीट पर समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी अंबरीष सिंह पुष्कर ने बेहद कम मार्जिन से जीत दर्ज की थी। इस बार सपा ने अंबरीष की जगह मोहनलालगंज से विधायक रही सुशीला सरोज को मैदान में उतारा था। भाजपा के अमरेश कुमार ने उन्हें 16581 वोटों से हराकर ऐतिहासिक जीत दर्ज की है। देश के पहले विधान सभा चुनाव के साथ मोहनलालगंज सीट अस्तित्व में है। मोहनलालगंज सुरक्षित समाजवादी पार्टी की परंपरागत सीट मानी जाती रही है। 2017 में अंबरीष पुष्कर ने 530 वोटों से बसपा प्रत्याशी रामबहादुर को हराया था। अंबरीष को 71,574 मत जबकि राम बहादुर को 71044 मत मिले थे। भाजपा समर्थन से लड़े पूर्व मंत्री आरके चौधरी तीसरे नंबर पर रहे थे। इस बार सपा ने अंबरीष सिंह पुष्कर के बजाए अपनी पूर्व सांसद व मोहनलालगंज से विधायक रही सुशीला सरोज को मैदान में उतारा है। बीजेपी ने अमरेश कुमार को टिकट दिया है तो कांग्रेस से ममता चौधरी और बीएसपी से देवेंद्र कुमार मैदान में है। मोहनलालगंज विधानसभा सीट वर्ष 1951 में बनाई गई थी। 2017 में सरोजनीनगर विधानसभा में लगने वाले सिसेंडी समेत कई गांव मोहनलालगंज में जोड़ दिये गए। इस विधान सभा क्षेत्र में कुछ शहरी क्षेत्र भी आते हैं। वर्ष 1951 से लेकर 2017 तक इस विधान सभा से अलग-अलग पार्टियों से विधायक रहे। कई तो कई-कई बार विधायक रहे हैं। इस क्षेत्र से सबसे पहले कांग्रेस से महाबीर प्रसाद विधायक बने। इसके बाद रामप्रसाद यादव प्रजा सोशलिस्ट पार्टी, ख्यालीराम दो बार विधायक प्रजा सोशलिस्ट पार्टी से, राम शंकर रविवासी कांग्रेस, नरायन दास तीन बार कांग्रेस से, संतबक्स रावत जनता पार्टी और सपा से पांच बार विधायक, चौधरी ताराचंद सोनकर कांग्रेस से विधायक रहे। आरके चौधरी तीन बार विधायक रहे। वह एक बार बसपा, एक बार निर्दलीय और एक बार राष्ट्रीय स्वाभिमान पार्टी के बैनर तले चुनाव जीते। चंदा रावत समाजवादी पार्टी से विधायक रहीं और अब वर्तमान में सपा से अंबरीष सिंह पुष्कर विधायक थे।

यूपी में का बा के जवाब में जनता बोली प्रदेश में सिर्फ बाबा

जनता ने भाजपा को दिया पूर्ण बहुमत, सपा दूसरे नंबर पर

सांसद रवि किशन का चुनावी गीत नेहा सिंह पर पड़ा भारी

दिव्यभान श्रीवास्तव

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 2022 में प्रचार के दौरान में बिहार की चर्चित गायिका नेहा सिंह राठौर का गीत यूपी में का बा का भाजपा के सांसद रवि किशन के बाद अब यूपी की जनता ने भी जवाब दे दिया है। प्रदेश में सात चरण के मतदान में जनता ने पूरी तरह बाबा यानी बुलडोजर वाली सरकार का साथ दिया। नेहा सिंह का का बा चुनावी गीत पर रवि किशन का सब बा भारी पड़ा। इससे पहले भी भाजपा के कार्यकर्ता कह रहे थे कि अब 10 मार्च बताई ईवीएम में का बा। बिहार में का बा गाकर सुर्खियां बटोरने वाली नेहा सिंह यूपी में का बा गाने के साथ चर्चा में थी। विपक्षी दल भी उनके गाने को लेकर भाजपा के साथ मुख्यमंत्री योगी पर हमला बोलने लगे।

इसके बाद गोरखपुर से भाजपा के सांसद रवि किशन शुक्ला ने यूपी में सब बा से माहौल बनाने का प्रयास किया। मगर नतीजे आने के बाद साफ हो गया कि जनता ने यूपी में का बा के जवाब में यूपी में बाबा को उपयोगी बताया। 2022 के चुनाव नतीजों में भाजपा को 273, सपा को 125, कांग्रेस को 2 व बसपा को एक सीट मिली। जबकि 2017 में भाजपा को 312, सपा को 47, बसपा को 19, कांग्रेस 07, अपना दल 09 सीटें मिली। वहीं 2017 में भाजपा को 39.67, सपा को 21.82, बसपा को 22.23, कांग्रेस को 6.25 व अपना दल को 0.98 मत प्रतिशत मिला, जबकि 2022 में भाजपा को 41.3, सपा को 34.90, बसपा को 12.9, कांग्रेस को 2.33 वोट प्रतिशत में मिला। 17वीं विधान सभा का कार्यकाल 15 मार्च तक है। 17वीं विधानसभा के लिए 403 सीटों पर चुनाव 11 फरवरी से 8 मार्च 2017 तक सात चरण में में हुए थे। भाजपा ने 312 सीटें जीतकर पहली बार यूपी विधान सभा में तीन चौथाई बहुमत हासिल किया था। 18वीं विधान सभा के गठन के लिए दस फरवरी से हुए सात चरण के चुनाव में सीधा मुकाबला सपा और भाजपा के बीच माना गया। भाजपा ने सीएम योगी और पीएम मोदी के चेहरे को आगे कर चुनाव लड़ा और इतिहास बनाया।

का बा पर भारी पड़ा भाजपा का सब बा

राठौर ने अपने गाने में कहा था कि बाबा के दरबार बा, खतम रोजगार बा....हाथरस के निर्णय जोहत लड़की के परिवार बा... अरे का बा.. यूपी में का बा... कोरोना से लाखन मर गईल ले,...कोरोना से लाखन मर गईल ले ... लाशन से गंगा भर गईल बे, टिकटी औ कफन नोचत कुकुर बिलार बा, ऐ बाबा, यूपी में का बा। बिहार के कैमूर निवासी राठौर ने यूपी के कानपुर से पढ़ाई की है। वह सोशल मीडिया और वीडियो प्लेटफॉर्म यूट्यूब पर लोकगीत गाती रही हैं। बता दूं कि नेहा राठौर के इस गाने पर भाजपा का सब बा भारी पड़ा।

यूपी में का बा गाना 63 लाख बार देखा गया

नेहा का गाना यूपी में का बा गाना सोशल मीडिया पर अब भी छाया है। नेहा के गानों की बात करें तो इस समय उनका यूपी में का बा गाना सबसे ज्यादा चर्चित है। इस गाने के सहारे ने भोजपुरी सिंगर ने यूपी सरकार पर निशाना साधा मगर फायदा नहीं मिला, बल्कि भाजपा को बढ़त मिली। यूपी में का बा को जहां 63 लाख से अधिक व्यूज मिले तो वहीं पार्ट-2 को भी 30 लाख से अधिक बार देखा गया। पार्ट-3 को भी 10 लाख से अधिक लोग देख चुके हैं। वहीं चुनाव नतीजों के बाद अब लोग सोशल मीडिया पर योगी को उपयोगी बताकर का बा ट्रोल कर रहे हैं।

जनता पुकारती है अखिलेश आइए का गीत नहीं चढ़ा सिरे

कोरोना वायरस संक्रमण के कारण उत्तर प्रदेश के विधान सभा चुनाव के दौरान पहले रैली और बड़ी सभाओं पर चुनाव आयोग की पाबंदी थी। ऐसे में राजनीतिक दलों ने जनता को अपनी ओर खींचने के लिए गानों का सहारा लिया। बिहार की गायिका नेहा सिंह ने गीत गाया कि यूपी में का बा तो भाजपा ने गोरखपुर के सांसद रवि किशन शुक्ला की आवाज में यूपी में सब बा गाना रिलीज कराया। इसके बाद समाजवादी पार्टी ने जनता पुकारती है, अखिलेश आइए से वोटर्स को लुभाने का प्रयास किया। नेहा ने गाने में क्या-क्या कहा राठौर के गाने में लखीमपुर में किसानों पर गाड़ी चढ़ाने का मामला, हाथरस में दुष्कर्म समेत कई अन्य घटनाओं का जिक्र करते हुए सरकार से सवाल किया।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_Sanjay

जिद... सच की

चिकित्सा सेवाओं को सुधारने की जरूरत

सवाल यह है कि प्रदेश के तमाम अस्पतालों में रिक्त पदों के बाद भी चिकित्सकों की भर्ती क्यों नहीं की जा रही है? भारी-भरकम बजट के बावजूद दवा और जांच उपकरणों की कमी क्यों है? प्राथमिक और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों को बेहतर बनाने के लिए कोई ठोस नीति क्यों नहीं अपनायी जा रही है? क्या केवल मेडिकल कॉलेज की स्थापना भर से प्रदेश की चिकित्सा सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार हो जाएगा?

तमाम कवायदों के बावजूद यूपी में सरकारी चिकित्सा सेवाओं में सुधार होता नहीं दिख रहा है। सरकारी अस्पताल चिकित्सकों, पैरामेडिकल स्टाफ, दवा और जांच उपकरणों की कमी से जूझ रहे हैं। इसका सीधा असर गरीब जनता पर पड़ रहा है। उन्हें समय पर बेहतर इलाज नहीं मिल पा रहा है। सवाल यह है कि प्रदेश के तमाम अस्पतालों में रिक्त पदों के बाद भी चिकित्सकों की भर्ती क्यों नहीं की जा रही है? भारी-भरकम बजट के बावजूद दवा और जांच उपकरणों की कमी क्यों है? प्राथमिक और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों को बेहतर बनाने के लिए कोई ठोस नीति क्यों नहीं अपनायी जा रही है? क्या केवल मेडिकल कॉलेज की स्थापना भर से प्रदेश की चिकित्सा सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार हो जाएगा? आयुष्मान कार्ड के बावजूद अधिकांश अस्पतालों में सभी कार्ड धारकों को इसका लाभ क्यों नहीं मिल पा रहा है? क्या जनता के स्वास्थ्य की रक्षा करना सरकार का दायित्व नहीं है?

कोरोना महामारी ने प्रदेश के स्वास्थ्य सेवाओं की पोल खोलकर रख दी है। कोरोना की दूसरी लहर में संक्रमितों को अस्पतालों में इलाज तक नहीं मिल सका। ऑक्सीजन और दवाओं के लिए लोग इधर-उधर भटकते रहे। समुचित इलाज नहीं मिलने के कारण कई लोगों की मौत हो गयी। हालांकि वैक्सीनेशन के बाद तीसरी लहर गंभीर रूप नहीं ले पायी लेकिन कोरोना ने प्रदेश की स्वास्थ्य सेवाओं की हालत को उजागर कर दिया। हकीकत यह है कि प्रदेश के अधिकांश सरकारी अस्पताल विशेषज्ञ चिकित्सकों की कमी से जूझ रहे हैं। इन अस्पतालों में पैरामेडिकल स्टाफ भी पर्याप्त संख्या में मौजूद नहीं हैं। यह स्थिति तब है जब अस्पतालों में सैकड़ों पद रिक्त पड़े हुए हैं और वर्षों से इनकी नियुक्ति प्रक्रिया शुरू नहीं की जा सकी है। इसके कारण एक-एक चिकित्सक को रोजाना तीन सौ से अधिक रोगियों को परामर्श देना पड़ता है। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों की हालत और भी खराब है। अधिकांश में चिकित्सक नदारद मिलते हैं। इसके कारण ग्रामीण क्षेत्र के रोगियों को शहर के जिला अस्पतालों का रुख करना पड़ता है। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र टीकाकरण का सेंटर बन चुके हैं। दवा की किल्लत के कारण गरीबों को बाहर से महंगी दवाएं लेनी पड़ती हैं जबकि जांच उपकरणों की कमी के चलते जांच के लिए महीनों इंतजार करना पड़ता है। इसके कारण गरीब मरीजों को सबसे अधिक परेशानी का सामना करना पड़ता है। जाहिर है यदि सरकार आम जनता को बेहतर और गुणवत्ता युक्त चिकित्सा उपलब्ध कराना चाहती है तो उसे न केवल अस्पतालों की व्यवस्था को दुरुस्त करना होगा बल्कि संसाधनों को भी बढ़ाना होगा।

संजय

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

कॉर्पोरेट के मुनाफा लालच से बढ़ती महंगाई

देविंदर शर्मा

आज जब खुदरा मुद्रास्फीति अनुपात से बाहर होकर डोल रही है, दुनिया नया अचंभा देख रही है। यूं तो कई तरीकों से इसका पता पहले भी था, लेकिन इतने उघड़े रूप में नहीं। मुद्रास्फीति बढ़ने के साथ कंपनियों का मुनाफा बढ़ रहा है, इस बार की वृद्धि ऐतिहासिक है। कंपनियों का फायदा बढ़ने के साथ ही मुख्य कार्यकारी या शीर्ष अधिकारी अपने वेतन में भारी इजाफा, शेयरों की पुन: खरीद और लाभांश भुगतान में वृद्धि पा रहे हैं। कंपनियां कहती हैं कि वे इस बाबत कुछ नहीं कर सकतीं, उपभोक्ता को बताया जा रहा है कि 'असामान्य मुद्रास्फीति' कामगारों की वेतन-वृद्धि और उत्पादन मूल्य में अनाप-शनाप इजाफे से बनी है। इससे इंकार नहीं कि कोरोना महामारी ने आपूर्ति श्रृंखला बाधित की है, लेकिन मुद्रास्फीति में जो ऊंचा और सतत उछाल आया है, वह मांग-आपूर्ति के सरल समीकरण वाली विद्रूपता को भी झुठला रहा है। यह बताने से ज्यादा छिपा रहा है।

जनवरी माह में अमेरिका में खुदरा मुद्रास्फीति पिछले 40 सालों में सर्वोच्च यानी 7.5 फीसदी रही। यूके में यह दर पहले ही 5.4 प्रतिशत होकर पिछले 30 सालों की उच्चतम है और बैंक ऑफ इंग्लैंड ने अप्रैल तक इसे 7.1 फीसदी छूने की चेतावनी दी है जबकि भारत में भी खुदरा मुद्रास्फीति 6.1 प्रतिशत हो चुकी है, यह डर पहले ही है कि आयात-मुद्रास्फीति से उपभोक्ता वस्तु मूल्य और ऊपर उठेंगे। आर्थिक सर्वे-2022 की चेतावनी है- भारत आयात-मुद्रास्फीति, खासकर ऊर्जा के ऊंचे वैश्विक मूल्यों के दुष्प्रभावों को लेकर सचेत रहे। इस बीच अंतरराष्ट्रीय वाणिज्य पत्रिका द फाइनेंशियल टाइम्स के 7 फरवरी अंक में एक शीर्षक ने मेरा ध्याना खींचा- 'टायसन को मुद्रास्फीति से लगाव है।' इसने मुझे हैरान कर छोड़ा कि आज जो ऊंची मुद्रास्फीति विश्वभर में है, क्या वह बस से बाहर आर्थिक कारणों की वजह से है या फिर कॉर्पोरेट्स के लालच को मुद्रास्फीति का नया जामा पहनाकर पेश किया जा रहा है। यह समझने के लिए शुरुआत टायसन फूड्स से करते हैं जो अमेरिका के मांस बाजार के 85 फीसदी हिस्से पर काबिज 4 शीर्ष कंपनियों में एक है और जिन पर राष्ट्रपति बाइडेन ने 'आपदा में अवसर' पाने का इल्जाम पहले ही जड़ रखा हैं। फोर्ब्स पत्रिका के अन्य लेख के मुताबिक टायसन फूड्स 'खर्चा कम-कमाई ज्यादा' कर रही है। माना कि पशु-आहार और परिवहन शुल्क बढ़ा है, लेकिन यह भी तथ्य है कि टायसन फूड्स का

परिचालन मुनाफा अंतर महामारी से पहले के मुकाबले दोगुना हो गया है। जहां चारों पशु-मांस उत्पादक कंपनियों के शुद्ध लाभ ने 300 फीसदी की छलांग लगाई है वहीं खुदरा मांस मूल्य में भारी बढ़ोतरी हुई है, बीफ में यह इजाफा अमूमन 20 प्रतिशत हुआ। जबकि कंपनियों द्वारा पशुपालक को जंतु का देय-मूल्य पिछले 50 सालों में न्यूनतम है। गार्जियन अखबार का लेख बताता है कि यूरोप में लोकप्रिय ब्रांड हेनेकेन बीयर बिक्री में 4.3 फीसदी इजाफा हुआ, जिससे सकल लाभ 80 फीसदी दर्ज हुआ। साल 2021 में मुनाफा रिकॉर्ड 2.26 बिलियन डॉलर रहा तथापि कंपनी ने आगामी महीनों में मूल्य-वृद्धि की घोषणा की है। अब बात स्टारबक्स कंपनी की। जाहिर है यह केवल कॉफी न होकर, अहसास है, जिसकी कीमत आप अदा करते हैं। पिछले साल आखिरी तिमाही में कंपनी मुनाफे में 31 प्रतिशत वृद्धि हुई। वर्ष 2021 में स्टारबक्स अपनी आमदनी 8.1 बिलियन डॉलर से ज्यादा रहने के बावजूद मूल्य बढ़ाना चाहती है। रोचक यह कि कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी का वेतन-भत्ता 39 प्रतिशत इजाफे के साथ कुल मिलाकर 2.4 करोड़ डॉलर हो गया तो वहीं दुनियाभर के कॉफी उत्पादक किसान न्यूनतम आय वर्ग में आते हैं।

सिएट्ल स्थित क्रेडिट कार्ड प्रोसेसिंग कंपनी ग्रैविटी पेमेंट के संस्थापक डैन प्राइस ने अपने ट्वीट में न्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट का हवाला देकर कहा, 'किराना वस्तुएं इतनी महंगी क्यों हैं? क्रोगर (अमेरिकी खुदरा वस्तु कंपनी) का मुनाफा रिकॉर्ड ऊंचाई पर है। स्टॉक मूल्य में गत एक साल में 36 फीसदी वृद्धि दर्ज हुई। मुख्य कार्यकारी अधिकारी का वेतन 45 फीसदी बढ़ोतरी के साथ 2.2 करोड़ डॉलर हो गया जो कि एक मध्यम दर्जा कर्मी से 909 गुना ज्यादा है। सरल शब्दों में कॉर्पोरेट्स के दिन इतने अच्छे दिन कभी न थे। रोजमर्रा का किराना हो या कॉफी, उपभोक्ता वस्तुओं से लेकर ईंधन तक नेटफ्लिक्स और अमेजॉन प्राइम तक ने अपने मुनाफे में भारी बढ़ोतरी और न्यूनतम कर अदायगी के बावजूद शुल्क बढ़ा दिया है। इसके बावजूद बाजार अर्थशास्त्रियों का एक वर्ग मुद्रास्फीति और कॉर्पोरेट्स लालच के बीच कोई संबंध निकालना पसंद नहीं करेगा, इस पर हमें और ज्यादा हैरानी नहीं होनी चाहिए।

लड़ाई से ऊर्जा संकट की आहट

अरविंद मिश्रा

रूस-यूक्रेन युद्ध से मानवीय विभीषिका की तस्वीरें हर किसी को व्यथित कर रही हैं। युद्ध जान-माल, आजीविका और खाद्य सुरक्षा को लंबे समय तक बाधित करते हैं। यह युद्ध हथियारों से लड़ा जा रहा है, जिसके केंद्र में ऊर्जा संसाधन व परियोजनाएं हैं। अमेरिका के बाद रूस विश्व का दूसरा सबसे बड़ा तेल उत्पादक देश है। रूस और सऊदी अरब दोनों 12-12 प्रतिशत कच्चे तेल का उत्पादन करते हैं। अमेरिका दुनिया में सर्वाधिक 16 प्रतिशत कच्चा तेल उत्पादित करता है। रूस की आमदनी का 43 प्रतिशत हिस्सा ऊर्जा संसाधनों के निर्यात से आता है। वैश्विक तेल आपूर्ति में रूस की हिस्सेदारी 10 प्रतिशत है। यूरोप की एक तिहाई और एशियाई देशों की प्राकृतिक गैस और कच्चे तेल की बड़ी जरूरत रूस से ही पूरी होती है। यूरोप में तो रूस ने गैस पाइपलाइन बिछाई है। ये बेलारूस, पोलैंड, जर्मनी समेत अनेक देशों से गुजरती है।

विश्व इतिहास में पहली बार किसी युद्ध में ऊर्जा कूटनीति चरम पर है। ईंधन की कीमतें युद्ध के विस्तार के साथ आसमान छू रही हैं। कच्चे तेल की दरें 2014 के बाद सबसे ऊंचे स्तर पर हैं। रूस पर लगे बैंकिंग प्रतिबंधों का सीधा असर तेल टैंकरों व जहाज को मिलने वाली क्रेडिट गारंटी पर पड़ रहा है। गैस और तेल की आधे से अधिक की जरूरत के लिए रूस पर निर्भर जर्मनी ने नॉर्ड स्ट्रीम-2 गैस पाइपलाइन का संचालन रोक दिया है। रूस के सेंट्रल बैंक पर प्रतिबंध से रूसी अर्थव्यवस्था को झटके लगने लगे हैं। रूसी मुद्रा रूबल रिकॉर्ड निचले स्तर पर है। प्रमुख पेट्रोलियम कंपनी शेल ने रूस के स्वामित्व वाली गैस कंपनी गैजप्रोम के साथ सभी साझा उपक्रम बंद कर दिया है। ब्रिटिश पेट्रोलियम (बीपी) ने युद्ध के बीच ही रूस की सरकारी तेल कंपनी रोसनेफ्ट में अपनी हिस्सेदारी बेचने का ऐलान कर चौंकाया है। ब्रिटिश पेट्रोलियम की रोसनेफ्ट में 19.75 प्रतिशत की हिस्सेदारी रही है। रूस के पहले एलएनजी संयंत्र सखालिन-2 में शेल की 27.5 प्रतिशत हिस्सेदारी है, जो देश के कुल एलएनजी निर्यात का एक तिहाई है। अमेरिकी ऊर्जा फर्म एक्सॉन रूस की सखालिन-1 तेल और गैस परियोजना के माध्यम से संचालित होती है। इसमें ओएनजीसी की भी हिस्सेदारी है।

स्पष्ट है कि इस नुकसान की भरपाई के लिए संबंधित देश और उनकी कंपनियां तेल व गैस की कीमतों को नया उछाल देंगे। रूस प्रायोजित तेल जहाजों पर प्रतिबंध लगाये जा रहे हैं। रूस के तेल व गैस जहाजों को पश्चिम की कंपनियां बीमा सुरक्षा प्रदान करेंगी, इसकी उम्मीद न के बराबर है। विकसित देश भले ही मौजूदा हालात को झेल लें, लेकिन विकासशील व छोटे देशों के लिए यह बड़ी चुनौती है। भारत की बात करें तो रक्षा से लेकर ऊर्जा परियोजनाओं पर रूस के साथ हमारे बड़े द्विपक्षीय करार हैं। भारत 85 प्रतिशत तेल और 65 प्रतिशत प्राकृतिक गैस आयात करता है। वहीं यूरेनियम और बिजली संयंत्र स्थापना से जुड़े आवश्यक उपकरण भी हम रूस से आयात करते हैं।

कच्चे तेल की कीमत से हमारे यहां पेट्रोल-डीजल और रसोई गैस की कीमतें निर्धारित होती हैं। यानी वैश्विक बाधा का सीधा असर महंगाई पर पड़ेगा। हालांकि, कच्चे तेल व प्राकृतिक गैस का बड़ा हिस्सा मध्य पूर्व, अफ्रीका और उत्तरी अमेरिका से भी आयात होता है। हमें कच्चे तेल का रणनीतिक भंडार बढ़ाना होगा। आरक्षित तेल भंडार भूमिगत टैंकों, पाइपलाइन और जलपोतों में संग्रहित किया जाता है। कोरोना संकट में भारत ने इस क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य किया है। अमेरिका और मध्य पूर्व तथा अफ्रीकी देशों से तेल कैसे अधिक लाया जाये, इसके रास्ते निकालने होंगे। भारत और रूस ने एक-दूसरे के यहां जो निवेश किये हैं, उन्हें सुरक्षित करने के लिए द्विपक्षीय करार नये सिरे से परिभाषित हों। संयुक्त राष्ट्र संघ जब तक रूस पर प्रतिबंध नहीं लगाता है, तब तक भारत उन प्रतिबंधों को मानने के लिए बाध्य नहीं है। भारत अन्य देशों को साथ लेकर ऊर्जा सुरक्षा के लिए मध्यस्थता की नीति अपना सकता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की वैश्विक साख इसमें मददगार होगी। रूस और यूक्रेन के बीच शांति बहाली से पश्चिम और यूरोप हिंद महासागर में चीन की आक्रामकता पर नजर रख सकेंगे।

चीन इस मामले में रूस का साथ किस तरह दे रहा है यह बात छिपी नहीं है। रूस पर लग रहे प्रतिबंधों के बाद अब यह संघर्ष जितने दिन और खिंचेगा, पुतिन की आंतरिक चुनौतियां बढ़ेंगी। चीन और रूस मौजूदा गठबंधन के पीछे भी ऊर्जा अहम किरदार है। रूस के कुल तेल निर्यात में चीन 15.4 प्रतिशत हिस्सा रखता है। सिर्फ सऊदी अरब ही चीन को इस अनुपात से अधिक तेल बेचता है। चीन की प्राकृतिक गैस की कुल मांग को पूरा करनेवाला रूस तीसरा बड़ा देश है। रूस के कुल प्राकृतिक गैस निर्यात में पिछले साल चीन ने 6.7 प्रतिशत की हिस्सेदारी रखी। पहले से महंगाई से जूझ रहे अमेरिका को भी महंगे ईंधन की चोट से परेशानी होगी। इस साल अमेरिकी सीनेट का चुनाव प्रस्तावित है। साल 2021 में अमेरिका ने रूस से अपनी जरूरत का तीन प्रतिशत कच्चा तेल आयात किया। अमेरिका रूस से आयातित भारी कच्चे तेल को गैसोलीन, डीजल और विमान ईंधन में बदलता है। जाहिर है, अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडन ऐसे निर्णायक समय में महंगे ईंधन की तपिश नहीं झेलना चाहेंगे। बेहतर होगा कि पूरी दुनिया ऊर्जा संसाधनों का उपयोग मानवीय जीवन की बेहतरी के लिए करे न कि प्रकृति के इन अनमोल संसाधनों को युद्ध का जरिया बनाया जाये।

ब्लड प्रेशर ठीक रखने के लिए योगासन

आज कल खराब लाइफस्टाइल के कारण उच्च रक्त चाप यानी हाई बीपी की समस्या बहुत आम हो गई है। कम उम्र के लोग भी इसके शिकार होने लगे हैं। बीपी कई कारणों की वजह से बढ़ सकता है। बेतरतीब जीवनशैली, फैमिली हिस्ट्री, उम्र, किडनी का रोग, मोटापा, व्यायाम न करना आदि इसके कारण हो सकते हैं। अगर बात हाथ से निकल चुकी है और किसी भी वजह से आपका बीपी हाई रहने लगा है तो आप इसे कंट्रोल कर सकते हैं।
दरअसल, Yoga Journal बेवसाइट के मुताबिक आप कुछ योगासनों का अभ्यास कर अपने बीपी को बढ़ने से रोक सकते हैं। जानिए कौन से आसान आपकी इस काम में मदद करेंगे।

बालासन

इस आसन को करने से बीपी संतुलित रहता है। जानकारी के मुताबिक इस योगासन से बॉडी रिलैक्स होती है। साथ ही हिप्स और रीढ़ की हड्डी के लिए भी ये अच्छा है। बालासन के लिए सबसे पहले योगा मैट पर वज्रासन में बैठ जाएं। इसके बाद सांस लेते हुए दोनों हाथों को सिर के ऊपर ले जाएं। अब सांस छोड़ते हुए आगे की तरफ झुकें और हथेलियों और माथे को जमीन पर टिकाएं। इस दौरान श्वास-प्रश्वास का ध्यान रखें।

विरासन

हाई बीपी से परेशान लोगों के लिए ऐसे योगाभ्यास जिनमें सांस लेना शामिल हो, फायदेमंद होता है। विरासन से नर्वस सिस्टम ठीक रहता है और तनाव से राहत मिलती है व रक्तचाप कम होता है। इस आसन को करने के लिए जमीन पर घुटनों के बल बैठ जाएं। अपने हाथों को घुटनों पर रखें। अपने हिप्स को एड़ियों के ठीक बीच में लाएं और घुटनों के बीच की दूरी कम कर दें। अपनी नाभि को भीतर की ओर खींचें। कुछ देर इस मुद्रा में रहें, फिर आराम करें।

शवासन

शवासन के अभ्यास से उच्च रक्त चाप के मरीजों को आराम मिलता है। इस आसान को करने के लिए योगा मैट पर पीठ के बल लेट जाएं और आखें बंद कर लें। इसके बाद अपने पैरों को फैला लें। अपने पैरों को आराम दें। अपने हाथों को बॉडी के साइड में बिना टच करे रखें। हथेलियों को फैला लें। अपने पूरे शरीर को आराम दें। धीमी और गहरी सांस लें। इस मुद्रा में कुछ देर रहें।

हंसना मना है

पत्नी: कहां जा रहे हो। पति: मरने जा रहा हूं। पत्नी: कहीं भी जाओ लेकिन स्वेटर पहनकर जाना। बाहर बहुत ठंड है, बीमार हुए तो तुम्हारी खैर नहीं।

सोनू: यार आज मैं बेहोश हो गया। मोनू: क्या हो गया भाई। सोनू: आज मैं घर पर पुराने कागजात देख रहा था और तभी मेरे हाथ में पत्नी की ग्यारवीं क्लास का रिपोर्ट कार्ड आ गया। मोनू: हां तो बेहोश कैसे हो गया। सोनू: अरे नंबरों के नीचे रीमार्क में लिखा था, मधुरभाषी एवं शांतिप्रिय छात्रा।

पत्नी तुम्हें मेरे साथ बिताए 10 साल का समय कैसा लगा। पति: एक सेकंड के बराबर। पत्नी: मेरे लिए 10 हजार रुपये कितने होते हैं। पति: एक रुपये के सिक्के के बराबर। पत्नी: तो मुझे एक रुपये का सिक्का दो। पति: तुम मेरा एक सेकंड तक वेट करो।

पत्नी : हमारे पड़ोसी ने नया एलईडी टीवी खरीदा है, आप भी खरीदकर लाइए ना। पति: अरे जिसके पास तुम्हारे जैसी खूबसूरत बीवी हो, वह क्यों अपना वक्त टीवी देखने में बर्बाद करेगा। पत्नी: आप भी ना, अभी आपके लिए पकौड़े बनाकर लाती हूं।

कहानी | बूढ़ी महिला की सीख

चाणक्य अपमान भुला नहीं पा रहे थे। शिखा की खुली गांठ हरपल अहसास कराती कि धनानंद के राज्य को शीघ्रातिशीघ्र नष्ट करना है। चंद्रगुप्त के रूप में एक ऐसा होनहार शिष्य उन्हें मिला था जिसको उन्होंने बचपन से ही मनोयोगपूर्वक तैयार किया था। अगर चाणक्य प्रकांड विद्वान थे तो चंद्रगुप्त भी असाधारण और अद्भुत शिष्य था। चाणक्य बदले की आग से इतना भर चुके थे कि उनका विवेक भी कई बार ठीक से काम नहीं करता था। चंद्रगुप्त ने लगभग पांच हजार घोड़ों की छोटी-सी सेना बना ली थी। सेना लेकर उन्होंने एक दिन भोर के समय ही मगध की राजधानी पाटलिपुत्र पर आक्रमण कर दिया। चाणक्य, घनानंद की सेना और किलेबंदी का ठीक आकलन नहीं कर पाए और दोपहर से पहले ही धनानंद की सेना ने चंद्रगुप्त और उसके सहयोगियों को बुरी तरह मारा और खदेड़ दिया। चंद्रगुप्त बड़ी मुश्किल से जान बचाने में सफल हुआ। चाणक्य भी एक घर में आकर छुप गए। वह रसोई के साथ ही कुछ मन अनाज रखने के लिए बने मिट्टी के निर्माण के पीछे छुपकर खड़े थे। पास ही चौके में एक दादी अपने पोते को खाना खिला रही थी। दादी ने उस रोज खिचड़ी बनाई थी। खिचड़ी गरमा-गरम थी। दादी ने खिचड़ी के बीच में छेद करके गरमा-गरम घी भी डाल दिया था और घड़े से पानी भरने गई थी। थोड़ी ही देर के बाद बच्चा जोर से चिल्ला रहा था और कह रहा था, जल गया, जल गया। दादी ने आकर देखा तो पाया कि बच्चे ने गरमा-गरम खिचड़ी के बीच में अंगुलियां डाल दी थीं। दादी बोली, तू चाणक्य की तरह मूर्ख है, अरे गरम खिचड़ी का स्वाद लेना हो तो उसे पहले कोनों से खाया जाता है और तूने मूर्खों की तरह बीच में ही हाथ डाल दिया और अब रो रहा है। चाणक्य बाहर निकल आए, बुढ़िया के पांव छूए और बोला कि आप सही कहती हैं कि मैं मूर्ख ही था तभी राज्य की राजधानी पर आक्रमण कर दिया और आज हम सबको जान के लाले पड़े हुए हैं। चाणक्य ने उसके बाद मगध को चारों तरफ से धीरे-धीरे कमजोर करना शुरू किया और एक दिन चंद्रगुप्त मौर्य को मगध का शासक बनाने में सफल हुआ।

5 अंतर खोजें

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

शिक्षा के क्षेत्र में आपको उन्नति मिल सकती है। किसी दूसरे का उत्साह देखकर आप उत्साहित हो सकते हैं। इस राशि के साहित्यकार को काबिलियत के लिए सम्मानित किया जा सकता है।

वृषभ

आपकी बात और काम का असर लोगों पर हो सकता है? लोग आपके विचारों को सुनेंगे। किसी बैठक-समारोह का बुलावा भी आज आपको मिल सकता है।

मिथुन

भाइयों और बहनों से पूर्ण सहयोग मिलेगा। यदि आज आप नया वरिष्ठ अधिकारियों से संबंधों में चली आ रही अड़चन दूर होगी, लेकिन काम का बोझ बढ़ेगा।

कर्क

सपना हकीकत में बदल सकता है। लेकिन अपने उत्साह को काबू में रखें, क्योंकि ज्यादा खुशी भी परेशानी का सबब बन सकती है। अपने जीवन-साथी की उपलब्धियों की सराहना करें।

सिंह

आज आपका दिन ठीक-ठाक रहेगा। आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव रहेगा। ऑफिस में आपके काम की प्रशंसा हो सकती है। इस राशि के व्यापारी वर्ग को धन लाभ हो सकता है।

कन्या

आपके लिए दिन सामान्य रहेगा। लेन-देन और निवेश के मामलों में नई प्लानिंग करेंगे। आपके आसपास चहल-पहल भी रहेगी। आपकी एकाग्रता चरम पर होगी और एक साथ कई काम भी संभालने पड़ सकते हैं।

तुला

आज आपके ऊपर हनुमान जी की कृपा दृष्टि सबसे अधिक रहेगी। व्यवसायी वर्ग के लोग अपने काम के विस्तार से पहले पूर्ण छानबीन कर लें उसके बाद ही कदम आगे बढ़ाएं।

वृश्चिक

भावनात्मक तौर पर बहुत अच्छा दिन नहीं होगा। आपको अपने रोजमर्रा के कामों से छुट्टी लेकर आज दोस्तों के साथ घूमने का कार्यक्रम बनाना चाहिए।

धनु

आज आपका दिन शानदार रहेगा। आप अपनी समझदारी से चीजों को आसान बना लेंगे। कला के क्षेत्र में आपकी रुचि बढ़ेगी। आपकी सेहत तंदरुस्त रहेगी।

मकर

बिजनेस और नौकरी में कुछ अच्छा होने के इशारे मिल सकते है। किसी खास मामले को लेकर परिवार से बातचीत हो सकती है। ऑफिस के काम या अपने किसी शौक के कारण आप व्यस्त हो सकते हैं।

कुम्भ

आज आपको किसी विशेष कार्यक्रम में शामिल होने का अवसर मिलेगा। बजरंगबली की कृपा से आपके जीवन में आने वाले सभी प्रकार के दुखों का अंत होगा।

मीन

अपनी ऊर्जा को व्यक्तित्व-विकास के काम में लगाएँ, जिससे आप और भी बेहतर बन सके। बोलते समय और वित्तीय लेन-देन करते समय सावधानी बरतने की जरूरत है।

बालीवुड | मन की बात

महिलाओं के किरदार निभाते निभाते मैं खुद की पहचान खोने लगा था : अली असगर

कपिल शर्मा का शो बीते लंबे समय से दर्शकों को हंसाने का काम कर रहा है। शो में कपिल के साथ कई अन्य सेलेब्स भी अलग अलग किरदारों में नजर आते और मजेदार अंदाज में दर्शकों को एंटरनेट करते हैं। हालांकि कुछ सितारे ऐसे भी है, जिन्होंने अलग अलग वजहों से कपिल शर्मा के शो से दूरी बना ली और उन सेलेब्स में एक नाम अभिनेता व कॉमेडियन अली असगर का भी है। कपिल शर्मा के शो में दादी का किरदार निभाकर सभी का दिल लूटने वाले अली ने साल 2017 में शो को अलविदा कह दिया था लेकिन अब उन्होंने इसके पीछे की वजह बताई है। हाल ही में अली असगर ने KoiMoi से बातचीत की और बताया, मेरा किरदार किसी भी तरह से आगे नहीं बढ़ रहा था, खासकर दूसरे सीजन में। मैं खुद को कहने लगा था कि मैं सिर्फ एक स्टैंड अप कॉमेडियन नहीं हूं, मैं एक एक्टर हूं। मैं अगर लगातार महिलाओं के किरदार ही करता हूं तो कैसे काम चलेगा। अली ने बातचीत में कहा कहा, महिलाओं के किरदार निभाते निभाते मैं खुद की पहचान खोने लगा था। हालांकि इस बात में कोई शक नहीं है कि इससे मुझे बड़ी पहचान मिली। दादी ने मुझे बड़ा नाम दिया, बड़ा मंच दिया और सबकुछ अच्छा रहा... मैं इस बात से इनकार नहीं कर रहा, लेकिन मैं सिर्फ यही नहीं करते रहना चाहता था। अली ने कहा काफी सोचने के बाद मैंने महसूस किया कि अगर ये सब ऐसे ही चला रहा तो मुझे कोई भी बतौर एक्टर सीरियसली नहीं लेगा, जब तक मैं महिलाओं के किरदारों को न नहीं कहूंगा।

बच्चन पांडे के प्रमोशन पर बोले अक्षय कुमार

मैं पैसों के लिए नहीं बल्कि जुनून के लिए काम करता हूं

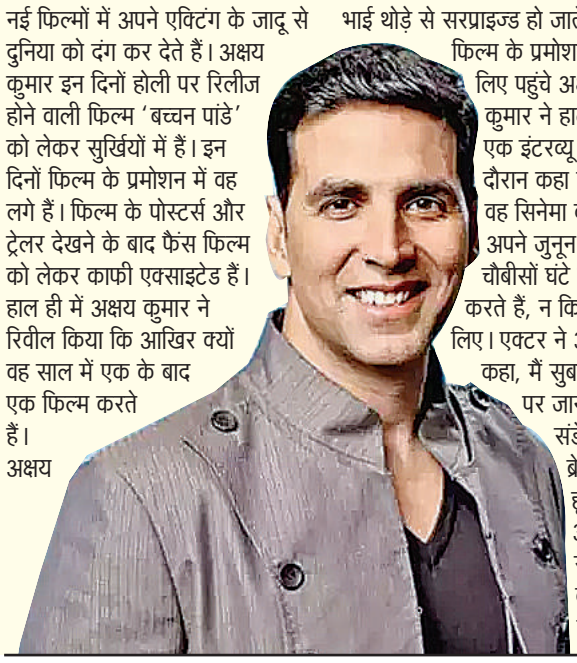

अक्षय कुमार इंडस्ट्री के सबसे बिजी एक्टर्स में से एक हैं। 54 साल की उम्र में वह एक के बाद एक साल में कई नई फिल्मों में अपने एक्टिंग के जादू से दुनिया को दंग कर देते हैं। अक्षय कुमार इन दिनों होली पर रिलीज होने वाली फिल्म 'बच्चन पांडे' को लेकर सुर्खियों में हैं। इन दिनों फिल्म के प्रमोशन में वह लगे हैं। फिल्म के पोस्टर्स और ट्रेलर देखने के बाद फैंस फिल्म को लेकर काफी एक्साइटेड हैं। हाल ही में अक्षय कुमार ने रिवील किया कि आखिर क्यों वह साल में एक के बाद एक फिल्म करते हैं। अक्षय कुमार से जब लोग सवाल करते हैं कि वह एक साल में इतनी सारी फिल्मों की शूटिंग कैसे करते हैं तो ये सुनने के बाद 'बच्चन पांडे' यानी अपने अक्की भाई थोड़े से सरप्राइज्ड हो जाते हैं। फिल्म के प्रमोशन के लिए पहुंचे अक्षय कुमार ने हाल ही में एक इंटरव्यू के दौरान कहा कि वह वह सिनेमा के प्रति अपने जुनून के लिए चौबीसों घंटे काम करते हैं, न कि पैसे के लिए। एक्टर ने आगे कहा, मैं सुबह काम पर जाना और संडे को ब्रेक लेता हूं। अगर आप रोजाना काम करते रहेंगे को आपके पास कई फिल्में पाइपलाइन में होंगी। अक्षय ने आगे कहा कि सभी लोग महामारी में काम कर रहे थे, जिनमें पुलिसकर्मी, मीडिया फोटोग्राफर और अन्य शामिल थे क्योंकि सभी को पैसा कमाना है। अक्षय कुमार ने आगे कहा कि आज मेरे पास जीवन में सब कुछ है, मैं एक अच्छी जिंदगी जी रहा हूं। मैं बिना कमाए आसानी से घर पर बैठ सकता हूं, लेकिन उन लोगों का क्या जो काम करना चाहते हैं (और पैसा कमाना चाहते हैं)? मैं आज पैसे के लिए नहीं बल्कि जुनून के लिए काम कर रहा हूं, जिस दिन मेरी दिलचस्पी खत्म हो जाएगी, उस दिन मैं काम करना बंद कर दूंगा। 18 मार्च को सिनेमाघरों में आने वाली आगामी एक्शन-कॉमेडी फिल्म 'बच्चन पांडे' फरहाद सामजी द्वारा निर्देशित है। फिल्म में अक्षय कुमार एक गैंगस्टर के रूप में नजर आने वाले हैं।

बॉलीवुड | मसाला

खतरों के खिलाड़ी 12 का हिस्सा नहीं बनेंगी रुबीना

रोहित शेट्टी के स्टंट बेस्ड रिएलिटी शो खतरों के खिलाड़ी 12 इस समय सुर्खियों में छाया हुआ है। कलर्स चैनल की ओर से खतरों के खिलाड़ी के नए सीजन को जल्द ही लॉन्च किया जाना है और अब तक इस शो में हिस्सा लेने के लिए कई सेलेब्स के नाम भी सामने आ चुके हैं। कई मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया गया था कि बिग बॉस 14 की विनर रुबीना दिलैक भी इस शो का हिस्सा बनेंगी और मेकर्स उन्हें मुंहमांगी रकम भी देने के लिए तैयार हो चुके हैं। अब जाकर एक्ट्रेस की ओर से यह साफ किया गया है कि वह रोहित शेट्टी के शो का हिस्सा बनेंगी या नहीं?

रुबीना दिलैक ने दिया ये जवाब

इंडिया फोरम को दिए गए इंटरव्यू में रुबीना दिलैक ने कहा है कि वह खतरों के खिलाड़ी 12 में हिस्सा नहीं लेने वाली हैं। एक्ट्रेस का कहना है, मैं खतरों के खिलाड़ी नहीं कर रही हूं। यह सिर्फ महज एक अफवाह है वैसे ही जैसे मैं नागिन कर रही थी। बता दें कि नागिन 6 शुरू होने से पहले यही कहा जा रहा था कि रुबीना दिलैक इस शो में अहम रोल निभाने वाली हैं। अभी भी लोग उम्मीद लगाए बैठे थे कि वह इस शो में एंट्री ले सकती हैं। खैर अब रुबीना ने खतरों के खिलाड़ी 12 के साथ-साथ नागिन 6 से जुड़े हर एक कन्फ्यूजन को दूर कर दिया है।

बॉलीवुड | छोटा पर्दा

अजब-गजब | यूक्रेन में फंसे बच्चे ने जीती जिंदगी की जंग

हाथ पर लिखे फोन नंबर के सहारे 1000 किलोमीटर दूर पहुंच गया 11 साल का बच्चा

कहते हैं युद्ध दो देशों के बीच नहीं बल्कि हजारों लोगों की जिंदगी और मौत के बीच होता है। सोचिए, बच्चे अपने माता-पिता को छोड़ना नहीं चाहते लेकिन महज 11 साल की उम्र में एक बच्चे को अपने माता-पिता से अलग 1000 किलोमीटर दूर अकेले ही जाना पड़ा। इस मासूम बच्चे की बहादुरी की तारीफ पूरी दुनिया कर रही है और बच्चे की तस्वीर वायरल हो गई है। ये युद्ध ही है, जिसने कच्ची उम्र में बच्चे का मन इतना पक्का कर दिया कि वो यूक्रेन से स्लोवाकिया तक का सफर अकेले तय करके पहुंच गया। इस दौरान उसके साथ थी, तो उसकी मां का दिया हुआ नोट और जिंदा रहने का हौसला। जानकारी के मुताबिक बच्चा दक्षिणी पूर्वी यूक्रेन के जपोरिजजिया का रहने वाला है।

हाथों में थी मां की चिट्ठी और पीठ पर बैग

बच्चा जिस जगह से आया है, वो जगह यूरोप का सबसे बड़ा न्यूक्लियर पावर प्लांट है और यहां रूस का कब्जा हो चुका है। यहां से लोग अब पलायन कर दूसरे शहरों में जा रहे हैं। इस बच्चे को उसकी मां ने एक बैगपैक और हाथों में फोन नंबर लिखकर दिया था। बच्चे की कहानी स्लोवाकिया की मिनिस्ट्री की ओर से शेयर की गई है। उन्होंने बताया है कि 11 साल का लड़का यूक्रेन से स्लोवाकिया सीमा पार करके आया था। उसके हाथ में प्लास्टिक बैग, पासपोर्ट और फोन नंबर की चिट थी। उसके माता-पिता यूक्रेन में ही हैं और वो अकेला आया है।'

बहादुरी ने सबका जीता दिल

इसी पोस्ट में बच्चे की निडरता और मुस्कान के साथ-साथ दृढ़ संकल्प की तारीफ की गई है और उसे रियल हीरो बताया गया है। बच्चे के माता-पिता से भी संपर्क किया जा चुका है। बच्चे के चेहरे की मासूमियत औरउसके पीछे का दर्द युद्ध और उससे बर्बाद हो रही ज़िंदगियों का गवाह है। उसकी बहादुरी भले ही लोगों का दिल जीत रही है लेकिन अपने पीछे एक सवाल भी छोड़ रही है कि ये मासूम मुस्कानें कब तक छिनती रहेंगी?

पूर्व पुरातत्वविद ने खोजा रहस्यमयी शहर 12 हजार साल से समुद्र के अंदर छिपा था

दुनिया के समुद्रों में कई रहस्य छिपे हुए हैं। इन रहस्यों के बारे में वैज्ञानिक जानने की कोशिश में लगे हुए हैं। अब इस बीच एक पूर्व पुरातत्वविद ने बड़ा दावा किया है जो हैरान करने वाला है। इस अमेरिकी पुरातत्वविद ने समुद्र में 12000 साल पुराने शहर की खोज की है। पुरातत्वविद का नाम क्रैकपॉट जॉर्ज गेले है। प्राचीन काल में मेक्सिको का एक शहर समुद्र में डूब गया था। अब पुरातत्वविद क्रैकपॉट जॉर्ज गेले ने इस रहस्यमयी शहर को खोजने का दावा किया है। कहा जाता है कि यह शहर किसी वजह से 12000 साल पहले समुद्र में डूब गया था। उन्होंने दावा किया है कि समुद्र में डूबे शहर में एनर्जी फील्ड और कई पिरामिड्स भी पाए गए हैं। उन्होंने बताया कि समुद्र की गहराई में मिले पत्थर बनी इमारतों के अवशेष हैं। आइए जानते हैं कि पूर्व आर्किटेक्ट ने इस शहर के बारे में और क्या बताया है? पुरातत्वविद क्रैकपॉट जॉर्ज गेले ने दावा किया है कि प्राचीन शहर के अवशेष के अलावा एक पिरामिड भी मिला है। उनका कहना है कि जहां पर 12000 साल पुराने शहर के अवशेष पाए गए हैं वहां पर वह 44 बार गए हैं। हालांकि एक्सपर्ट को उनके 12000 साल पुराने शहर को खोजने के दावे पर ज्यादा यकीन नहीं है। गेले ने दावा किया है कि ग्रेनाइट शहर के बीच में एक पिरामिड स्थित है। उन्होंने एक मीडिया से बातचीत में कहा कि सैकड़ों इमारतें रेत और गाद में दबी हुई हैं। क्रैकपॉट जॉर्ज गेले करीब 50 सालों से इमारतों के अवशेष और बड़े पिरामिड पर रिसर्च कर रहे हैं। उन्होंने बताया है कि कुछ दिनों पहले वह समुद्र में नाव से गए थे। उन्होंने इसी दौरान 12000 साल पुराने ग्रेनाइट के शहर को देखा। यह शहर पहले से ही चर्चा का विषय रहा है। मछुआरों ने कई बार जाल में अजीबोगरीब चट्टानों के फंसने के बारे में बताया है।

सपा ने बनाया रिकार्ड, पहली बार मुरादाबाद में जीतीं पांच सीटें

» पिछले चुनाव में जीतीं थीं चार सीटें, भाजपा प्रत्याशियों को दी शिकस्त

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुरादाबाद। प्रदेश में सपा की सरकार बेशक न बनी हो पर मुरादाबाद में पार्टी का प्रदर्शन शानदार रहा। मुरादाबाद में पार्टी ने रिकॉर्ड बनाते हुए पांच सीटें जीतीं। पिछली बार यहां अधिकतम चार सीटों पर जीत का रिकार्ड था। 2012 समाजवादी पार्टी के मुरादाबाद नगर, मुरादाबाद देहात, बिलारी, कुंदरकी सीट से विधायक चुने गए थे जबकि, 2017 में भाजपा की प्रचंड लहर के बीच मुरादाबाद देहात, कुंदरकी, बिलारी और ठाकुरद्वारा में जीत दर्ज की थी।

इस बार पुराने रिकार्ड में सुधार करते हुए सपा ने मुरादाबाद की छह में पांच सीटों पर जीत दर्ज की। जिन सीटों पर जीत दर्ज की उनमें एक बिलारी को छोड़ दिया जाय तो बाकी सीट पर जीत शानदार रही। कांठ में कमाल अख्तर ने भाजपा के राजेश कुमार सिंह चुन्नू 43,148 वोटों से हराया। ठाकुरद्वारा सीट पर सपा के नवाब जान ने भाजपा के अजय प्रताप सिंह पर 19,684 मतों से जीत दर्ज की। मुरादाबाद देहात विधान सभा क्षेत्र पर सपा के नासिर कुरैशी ने 45,146 मतों से जीत दर्ज की। वहीं कुंदरकी में जियाउर्रहमान ने 1,25,792 वोट लेकर भाजपा के कमल कुमार प्रजापति को 43,462 मतों से हराया। बिलारी में सपा के विधायक मु. फहीम ने भाजपा के परमेश्वर लाल सैनी को 7610 वोटों से हराया।

आजम खां और उनके बेटे अब्दुल्ला ने रचा इतिहास

रामपुर। दो साल से सीतापुर की जेल में बंद सपा सांसद आजम खां ने विधान सभा चुनाव में जिले में सबसे ज्यादा वोट हासिल कर इतिहास रच दिया। जिले में इससे पहले कभी विधान सभा चुनाव में इतने वोट किसी प्रत्याशी को नहीं मिले। इसी तरह स्वार टांडा से प्रत्याशी उनके बेटे अब्दुल्ला आजम ने जीत का बड़ा अंतर कायम करने में रिकार्ड बना दिया। अब्दुल्ला आजम को इस बार 126162 मिले हैं, जबकि उनके मुकाबले चुनाव लड़े अपना दल के हैदर अली खान उर्फ हमजा मियां को 65059 वोट मिले हैं। इस तरह वह 61103 वोटों के अंतर से चुनाव जीते हैं। वह जिले में सबसे ज्यादा अंतर से विजयी रहे हैं। रामपुर शहर में सांसद आजम खां ने 130649 वोट हासिल किए जबकि उनके मुकाबले रहे भाजपा प्रत्याशी आकाश सक्सेना को 75411 मत मिले। इस तरह आजम खां ने जिले में सबसे ज्यादा वोट हासिल किए।

देवबंद में जेलर पर जानलेवा हमला, पेड़ के पीछे छिपकर बचाई जान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

सहारनपुर। सहारनपुर के देवबंद में गुरुवार की रात का खाना खाने के बाद टहलने निकले देवबंद उपकारागार के जेलर पर बदमाशों ने जानलेवा हमला व फायरिंग की। जेलर ने पेड़ के पीछे छुपकर अपनी जान बचाई। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

उपकारागार में तैनात जेलर रीवन सिंह जेल की बगल में स्थित अपने सरकारी आवास से खाना खाने के बाद टहलने निकले थे। उसी दौरान परिसर की बाउंड्री वाल के पीछे से अचानक दो लोगों ने उन पर फायरिंग कर दी। वह गोली से बाल बाल बच गए और परिसर में खड़े पेड़ के पीछे छिपकर अपनी जान बचाई। फायरिंग की आवाज सुनकर जेल स्टाफ में अफरातफरी मच गई। द्वार पर तैनात संतरी और जेल वार्डर रायफल लेकर बदमाशों की तरफ दौड़ पड़े, जिन्हें देखकर बदमाश गाली गलौज करते हुए वहां से भाग खड़े हुए।

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि फौजान सईद पुत्र अहमद सईद 12/44, प्रयाग नारायण रोड, हज़रतगंज, लखनऊ खसरा नं.- 665, राजस्व ग्राम - भपटामऊ, परगना तहसील एवं जिला लखनऊ का अतिया सुलेमान पत्नी सुलेमान व अन्य के साथ सहखातेदार है एवं अपने हिस्से की उपरोक्त भूमि से एक मकान जो प्लाट सं.-1 पर निर्मित है क्षेत्रफल 780 वर्गफीट, आशा गोयल पत्नी सतीश गोयल एवं सतीश कुमार गोयल पुत्र राधेश्याम गोयल निवासीगण 577 तिकुनिया, सुठाना बरसोला, खीरी, उत्तर प्रदेश को विक्रय कर रहा है एवं क्रेतागण आधार हाउसिंग फाइनेन्स लिमिटेड शाखा लखनऊ से गृहऋण ले रहे हैं। यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो 7 दिन के अंदर निम्न से संपर्क करें।

मृगेन्द्र बहादुर सिंह
(अधिवक्ता)
आधार हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड
आफिस : ईडब्लूएस 209 & 210
सेक्टर जी, जानकीपुरम, लखनऊ
मो0 9415542801, 6394317537

वाराणसी में नोटा का भी चला सोंटा

रोहनिया में सबसे अधिक नोटा का किया गया इस्तेमाल

» विधानसभावार आयोग ने जारी किए आंकड़े

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

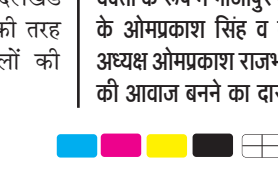

वाराणसी। नोटा यानी **None of the Above** के मतों के हिसाब से वाराणसी जिले में भले ही भाजपा के हिस्से में सभी सीटें आई हैं और दूसरे दलों ने करीबी चुनौती जीतने वालों को दी है, लेकिन आम जनता में एक बड़ा वर्ग वह भी है जो अपने उम्मीदवारों को मानकों पर खरा नहीं पा रहा है। इस लिहाज से वाराणसी जिले में भी नोटा का सोंटा खूब चला।

पिंडरा में 2575 ईवीएम और एक पोस्टल मत के साथ कुल 2576 मत डाले गए। यह कुल मतों में 1.17 फीसद नोटा का मत है। शिवपुर में 2286 ईवीएम और नौ पोस्टल मत के साथ कुल 2295 मत पड़े। यह कुल मतों में 0.91 फीसद नोटा का मत है। सेवापुरी में 1584 ईवीएम और तीन पोस्टल मत के साथ कुल 1587 मत हैं। कुल मतों में 0.72 फीसद नोटा का मत है। अजगरा में 2067 ईवीएम व तीन पोस्टल मत के साथ कुल 2070 मत हैं। कुल मतों में 0.84 फीसद नोटा का मत है। रोहनियां 2956 ईवीएम और 11 पोस्टल मत के साथ कुल 2967 मत रहे। कुल मतों में 1.2 फीसद नोटा का मत रहा। वाराणसी उत्तर में 1530 ईवीएम और दो पोस्टल मत के साथ कुल 1532 मत रहे। कुल मतों में 0.62 फीसद नोटा का मत रहा। सबसे अधिक नोटा मत का प्रयोग 2956 रोहनियां विधान सभा में हुआ है जबकि सबसे कम नोट मत वाराणसी दक्षिण में लोगों ने प्रयोग किया। रोहनिया में ही कुल मतों में सबसे अधिक 1.2 फीसद नोटा का प्रयोग किया गया है जबकि शहर दक्षिण में 0.48 फीसद कुल मतों में सबसे कम नोटा का प्रयोग किया गया है। रोहनियां में सबसे अधिक 11 पोस्टल मत नोटा तो पिंडरा में एक मत नोटा का मिला।

कांग्रेस प्रत्याशी मोना ने लगायी विजय की हैट्रिक

» रामपुर खास में खास नहीं कर सकी भाजपा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

प्रयागराज। सियासत के अनुभवी खिलाड़ी पूर्व राज्य सभा सदस्य प्रमोद तिवारी के कांग्रेसी गढ़ को इस बार भी सत्तादल हिला न सका। भाजपा ने पीछा करने की कोशिश तो की पर अंत में कमल नहीं खिला। प्रमोद की बेटी आराधना मिश्रा मोना रामपुरखास से जीत का ताज पहनते हुए हैट्रिक लगाकर विपक्षियों के घेरेबंदी को ध्वस्त कर दिया। मोना यहां से लगातार तीसरी बार विधायक चुनीं गईं। उन्होंने भाजपा प्रत्याशी को पटखनी दी।

रामपुरखास के कांग्रेसी दुर्ग को ध्वस्त करने के लिए अन्य दल 1980 से घेराबंदी करते आ रहे हैं। अभी तक भाजपा, सपा व बसपा अपने उम्मीदवार को विजय दिलाने में एड़ी चोटी का जोर लगा चुकी है। इस बार 2022 के चुनाव में भी रामपुरखास आए सीएम योगी आदित्यनाथ, गृहमंत्री अमित शाह, अपना दल राष्ट्रीय अध्यक्ष अनुप्रिया पटेल, सांसद संगम लाल गुप्ता आदि के द्वारा जनता को रिझाने के सभी प्रयास यहां असफल रहे। खुद भाजपा प्रत्याशी नागेश प्रताप सिंह की कोशिश काम न आई। 2017 में भाजपा की लहर के बीच भी बीजेपी प्रत्याशी नागेश प्रताप सिंह को 17,066 मतों से पराजित किया था। इस बार भी मोना ने विजय की हैट्रिक लगाकर भाजपा को पटखनी दी।

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि अमर सिंह यादव पुत्र बैजनाथ प्रसाद निवासी - 363/2, आलम नगर रोड, हसनगंज बावली, लखनऊ खसरा नं.- 424, राजस्व ग्राम - भूहर, तहसील एवं जिला लखनऊ का रामेश्वर पुत्र भगवन्तलाल, अमन सहकारी आवास समिति लिमिटेड लखनऊ व अन्य के साथ सहखातेदार है एवं अपने हिस्से की उपरोक्त भूमि से एक प्लाट, क्षेत्रफल 1200 वर्गफीट, रश्मि यादव पत्नी अश्वनी कुमार यादव पुत्री नवल किशोर यादव निवासिनी 561/59, सिन्धुनगर मानस नगर, लखनऊ को विक्रय कर रहा है एवं क्रेता आधार हाउसिंग फाइनेन्स लिमिटेड शाखा लखनऊ से गृहऋण ले रहा है। यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो 15 दिन के अंदर निम्न से संपर्क करें।

मृगेन्द्र बहादुर सिंह
(अधिवक्ता)
आधार हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड
आफिस : ईडब्लूएस 209 & 210
सेक्टर जी, जानकीपुरम, लखनऊ
मो0 9415542801, 6394317537

बुंदेलखंड फिर भाजपा के नाम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कानपुर। आम लोगों की सुरक्षा, गरीबों को राशन, घर और सम्मान निधि के साथ बुंदेलखंड के लिए कराए विकास कार्यों के बूते भाजपा गठबंधन ने यहां फिर प्रचंड जीत हासिल कर ली है। मोदी-योगी का चेहरा भी खूब चला।

बुंदेलखंड में सात जिलों बांदा, चित्रकूट, हमीरपुर, महोबा, जालौन, ललितपुर व झांसी की सभी 19 सीटें अभी भाजपा के पास थीं। 18वीं विधान सभा के लिए चुनाव में भाजपा यह इतिहास तो नहीं दोहरा सकी लेकिन उसके बिल्कुल करीब जरूर रही है। भाजपा 19 में से 16 सीटें जीती जबकि बांदा, जालौन व चित्रकूट जिले की एक-एक सीट सपा जीतने में कामयाब रही है। चित्रकूट सदर से प्रदेश के लोक निर्माण राज्यमंत्री चंद्रिका प्रसाद उपाध्याय चुनाव हार गए हैं। बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे के बनने की रफ्तार की तरह भाजपा का चुनावी रथ भी बुंदेलों की सरजमीं पर सरपट दौड़ा।

सदन में नहीं गूंजेगी विपक्ष से पूर्वांचल की जानी-मानी आवाज

नेता प्रतिपक्ष रामगोविंद चौधरी को देखना पड़ा हार का मुंह

» सपा-सुभासपा के जीते प्रत्याशियों पर होगा दारोमदार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

वाराणसी। प्रखर वक्ता के रूप में पहचाने जाने वाले दिग्गज समाजवादी व सदन में नेता प्रतिपक्ष रहे रामगोविंद चौधरी को बलिया की बांसडीह सीट पर इस बार हार का मुंह देखना पड़ा है। भाजपा उम्मीदवार केतकी सिंह ने उन्हें पराजित कर दिया तो बलिया नगर से पूर्व मंत्री नारद राय भी फिर चुनाव हार गए हैं। उन्हें भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष दयाशंकर सिंह के हाथों शिकस्त झेलनी पड़ी। इससे सदन में अक्सर गूंजने वाली इनकी आवाज इस बार नहीं सुनाई देगी। अब वक्ता के रूप में गाजीपुर के दिलदारनगर से सपा के ओमप्रकाश सिंह व जहूराबाद से सुभासपा अध्यक्ष ओमप्रकाश राजभर पर पूर्वांचल से विपक्ष की आवाज बनने का दारोमदार होगा।

भाजपा तथा निषाद दल की प्रत्याशी केतकी सिंह ने बलिया की बांसडीह सीट से समाजवादी पार्टी के कद्दावर नेता रामगोविंद चौधरी को हराया। 2017 में केतकी सिंह निर्दलीय चुनाव लड़कर तीसरे स्थान पर थीं। केतकी सिंह को 38,939 मत मिले। रामगोविंद चौधरी को 35,611 वोट मिले हैं। वहीं गाजीपुर की जहूराबाद विधान सभा सीट पर सुभासपा चीफ ओम प्रकाश राजभर ने करीब 44 हजार वोटों से जीत दर्ज की है। इस सीट पर सभी की नजरें लगी हुई थीं। यहां राजभर बनाम राजभर की लड़ाई मानी जा रही थी। जिसमें जीत ओपी राजभर को मिली। जहूराबाद की जनता ने ओम प्रकाश राजभर में भरोसा दिखाते हुए उन्हें विधान सभा पहुंचा दिया है। ओम प्रकाश राजभर ने करीब 44 हजार वोटों से भाजपा प्रत्याशी कालीचरण राजभर को हराया है। ओम प्रकाश राजभर को 1 लाख 14 हजार 860 वोट मिले हैं जबकि भाजपा के कालीचरण राजभर दूसरे नंबर पर रहे हैं। कालीचरण राजभर को 69 हजार 228 वोट मिले जबकि बीएसपी की शादाब फातिमा 53144 वोट पाकर तीसरे नंबर पर रही हैं। वहीं कांग्रेस के ज्ञान प्रकाश को मात्र 1559 वोट ही मिले।

लखनऊ में जमानत तक नहीं बचा पाए कांग्रेस-बसपा-आप प्रत्याशी

» भाजपा की आंधी में सपा को छोड़कर बाकी सभी प्रतिद्वंद्वी हुए हवा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। भाजपा की आंधी में सपा को छोड़कर बाकी सभी प्रतिद्वंद्वी हवा हो गए। सभी नौ विधानसभा सीटों पर सपा को छोड़कर कांग्रेस, आप और बसपा के प्रत्याशी अपनी जमानत तक नहीं बचा सके। कांग्रेस की हालत तो बेहद खराब रही। आम आदमी पार्टी (आप) के प्रत्याशी राजधानी की किसी भी विधानसभा सीट पर कुछ खास नहीं कर सके। सभी सातों विधानसभा सीटों पर पार्टी जमानत तक नहीं बचा सकी। मतों का प्रतिशत बढ़ाने उतरी आप मोहनलालगंज विधानसभा सीट को छोड़कर किसी भी विधानसभा क्षेत्र में चार हजार वोट भी नहीं ला सकी। कई बूथों पर उसके प्रत्याशियों को एक वोट भी नहीं मिला।

हालांकि इन सबके बावजूद पूर्वी विधानसभा से प्रत्याशी आलोक सिंह 31 राउंड तक मतगणना स्थल पर डटे रहे। वहीं आप के अन्य प्रत्याशी चंद घंटे बाद ही अपनी स्थिति देख मतगणना स्थल से जाते रहे। राजधानी की नौ विधानसभा सीटों से आम आदमी पार्टी को अपने प्रत्याशी उतारने थे। बीकेटी के प्रत्याशी का पर्चा खारिज हो गया था, जबकि मलिहाबाद में कोई प्रत्याशी मिला नहीं था। इस तरह पार्टी ने सात विधानसभा सीटों पर प्रत्याशियों को लड़ाया था। आप की ओर से स्टार प्रचारकों में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने सिर्फ एक सभा पुराने लखनऊ स्थित रफे आम क्लब में की थी। इसी मैदान से सभी प्रत्याशियों को जिताने की अपील करने के बाद प्रचार थम गया था। वहीं राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने जरूर कई विधानसभा क्षेत्रों में जनसंपर्क किया, लेकिन आम आदमी पर पार्टी कोई जादू नहीं कर सकी। मोहल्ला क्लीनिक, सरकारी स्कूलों में मुफ्त शिक्षा और तीन सौ यूनिट फ्री बिजली लेने में मतदाताओं ने रुचि नहीं दिखाई। सरोजनीनगर से रुद्रदमन सिंह बबलू को 19,711 वोट मिले। वह कांग्रेस की ओर से सबसे अधिक मत पाने वाले प्रत्याशी रहे। लखनऊ पश्चिम की उम्मीदवार शहाना को 2796, मलिहाबाद से इंदल रावत को 2142, मध्य से सदफ जाफर को 2927, कैंट से दिलप्रीत सिंह को 6510, लखनऊ पूर्वी से मनोज तिवारी को 4485, मोहनलालगंज से ममता चौधरी को 2990, उत्तर से अजय श्रीवास्तव को 3236 और बख्शी का तालाब में ललन कुमार को 9050 वोट मिले। इस तरह कोई भी कांग्रेसी अपनी जमानत नहीं बचा सका। इसी तरह बसपा और आम आदमी पार्टी के प्रत्याशी भी अपनी अपनी सीटों पर जमानत नहीं बचा सके।

वेस्ट यूपी में भाजपा को मिला जाटों और किसानों का साथ

» कृषि कानून और सीएए विरोधी आंदोलन का लाभ नहीं मिला विपक्ष को

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। कृषि कानून और सीएए विरोधी आंदोलन के साथ ही छुट्टा पशुओं की समस्या, हाथरस कांड और लखीमपुर खीरी कांड को पश्चिमी उत्तर प्रदेश में चुनावी मुद्दा बनाने वाले विपक्ष के सामने भाजपा को असहज स्थिति का सामना करना पड़ेगा, हालांकि ऐसा बिल्कुल नहीं हुआ। अपने विकास कार्यों, जनकल्याणकारी योजनाओं और कानून व्यवस्था को मुद्दा बनाकर जनता के बीच उतरी भारतीय जनता पार्टी को पश्चिमी यूपी में भी शानदार कामयाबी मिली है।

यहां तक कि भाजपा को उस जाट समाज का वोट भी झूमकर मिला, विपक्षी दलों द्वारा जिस बारे में भ्रम फैलाया जा रहा था कि वो भाजपा से नाराज हैं। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में मेरठ, सहारनपुर, मुरादाबाद, आगरा, अलीगढ़ और बरेली मंडलों के 26 जिलों की 136 विधानसभा सीटों पर सन 2017 के चुनाव में भाजपा ने 109 सीटों पर विजय हासिल की थी जबकि सपा के खाते में 21 सीटें गई थीं।

नहीं चला कृषि कानून के विरोध का मुद्दा

पश्चिमी उप्र में चुनाव की घोषणा के बाद कई मुद्दे थे। इनमें कृषि कानून के विरोध में चले आंदोलन को विपक्ष ने खूब हवा देने की कोशिश की थी। गाजीपुर बार्डर पर इस आंदोलन का नेतृत्व भारतीय किसान यूनियन के प्रवक्ता राकेश टिकैत कर रहे थे। रालोद अध्यक्ष जयंत चौधरी और सपा मुखिया अखिलेश यादव ने भी अपने चुनाव प्रचार में भाजपा पर किसान हितों की अनदेखी का बार-बार आरोप लगाया था। गन्ना बकाया, महंगाई और बेरोजगारी का भी राग छेड़ा गया। हालांकि, बाद के दिनों में यह सभी मुद्दे पीछे होते गए और इनकी जगह ले ली कानून व्यवस्था ने। भाजपा नेताओं के भाषण में विकास और जनकल्याणकारी योजनाओं के साथ ही कैराना पलायन से लेकर कवाल कांड और दंगों से लेकर सोतीगंज तक की चर्चा स्थायी भाव में बनी रही। चुनाव परिणाम से यह स्पष्ट हुआ कि कृषि कानून का मुद्दा कारगर नहीं रहा और अधिकांश जगहों पर जनता ने भाजपाराज में हुए विकास और बेहतर रही कानून व्यवस्था को ही सामने रखकर मतदान किया।

रालोद के गढ़ में भाजपा का जलवा

जाट बहुल जिला बागपत को रालोद का गढ़ माना जाता है। यहां विधानसभा की तीन सीटें हैं और पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह ने यहीं की छपरौली सीट से चुनाव लड़ा था। सन 2017 के चुनाव में यहां की दो सीटों पर भाजपा और एक सीट पर रालोद को विजय मिली थी। बाद में रालोद विधायक ने भी भाजपा का दामन थाम लिया था। इस बार के चुनाव में भी भाजपा ने यहां की दो सीटों पर कब्जा बरकरार रखा, जबकि छपरौली सीट रालोद के पाले में गई। हालांकि भाजपा को सजग रखेगा पश्चिमी क्षेत्र यदि 2017 से इस चुनाव के परिणाम की तुलना करना चाहेंगे तो बेशक वेस्ट यूपी में भाजपा की सीटें अपेक्षाकृत कम दिखेंगी।

2024 में आएंगे असली नतीजे : प्रशांत किशोर

» विधानसभा चुनावों में बीजेपी की जीत पर साधा निशाना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। देश के पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी ने चार में शानदार प्रदर्शन किया। पंजाब में आम आदमी पार्टी की जीत को छोड़ दें तो बीजेपी उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर में सरकार बनाने जा रही है। इस पर बिहार के रहने वाले व देश के जाने-माने राजनीतिक रणनीतिकार प्रशांत किशोर ने बड़ा बयान दिया है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा है कि भारत की असली लड़ाई के नतीजे तो साल 2024 के लोकसभा चुनाव में आएंगे। अपने ट्वीट में प्रशांत किशोर ने लिखा है कि देश के लिए लड़ाई साल 2024 के लोकसभा चुनाव में लड़ी जाएगी। यह लड़ाई राज्यों के विधानसभा चुनावों में नहीं लड़ी जानी है। तभी इसके नतीजे आएंगे। प्रधानमंत्री मोदी के बयान को लेकर प्रशांत किशोर आगे लिखते हैं कि साहेब यह बात जानते हैं, इसलिए विधानसभा चुनाव को परिणामों के जरिए विपक्ष के खिलाफ मनोवैज्ञानिक धारणा बनाने की चाल चल रहे हैं। इसलिए न तो इस झूठ में फंसे और न हीं इसका हिस्सा बनें। बता दें कि प्रधानमंत्री ने चुनाव नतीजों को लेकर पार्टी मुख्यालय में कहा था कि इन चुनावों ने साल 2024 के लोकसभा चुनाव के नतीजे तय कर दिए हैं।

छोटे दलों की सरताज बनी निषाद पार्टी, संजय निषाद का कद बढ़ा

» मंत्रिमंडल में मिल सकती है बड़ी जिम्मेदारी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। प्रदेश की राजनीति में निर्बल इंडियन शोषित हमारा आम दल (निषाद पार्टी) नए सितारे की तरह सामने आई है। इस बार विधानसभा चुनाव में पार्टी ने भाजपा के साथ मिलकर 16 सीटों पर प्रत्याशी खड़े किए थे। इनमें से 11 पर जीत हासिल हुई है। खास बात यह रही कि पार्टी ने 10 सीटों पर अपने सिंबल पर प्रत्याशियों को चुनाव मैदान में उतारा था। जबकि छह सीटों पर पार्टी के प्रत्याशी भाजपा के सिंबल पर मैदान में उतरे।

इस बार चुनाव में भाजपा के साथ निषाद पार्टी की जुगलबंदी मतदाताओं को खूब रास आई। पार्टी के ज्यादातर सीटों पर प्रत्याशियों ने जीत हासिल की है। गोरखपुर और बस्ती मंडल की पांच सीटों पर पार्टी ने प्रत्याशी उतारे थे। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष संजय निषाद के पुत्र सरवन निषाद चौरीचौरा से चुनावी मैदान में उतरे। वह गोरखपुर ग्रामीण से दावेदारी कर रहे थे। ऐन वक्त पर पार्टी ने उन्हें चौरीचौरा भेजा। यह विधानसभा पार्टी के लिए चुनौती साबित हो रहा था। यहां पर पार्टी के कद्दावर नेता बगावत कर चुके थे। भाजपा के टिकट पर सरवन ने करीब 45 फीसदी मत हासिल किया। महाराजगंज की नौतनवां सीट पर भी निषाद पार्टी ने जोरदार जीत हासिल की। इस सीट पर बाहुबली नेता अमरमणि के पुत्र अमन मणि निर्दलीय विधायक रहे। इस बार उन्हें निषाद पार्टी के ऋषी त्रिपाठी ने हरा दिया। कुशीनगर के तमकुहीराज और खड्डा सीट पर निषाद पार्टी के प्रत्याशियों को जीत हासिल हुई।

बसपा को बलिया के रसड़ा में मिली महज एक सीट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बलिया। यूपी चुनाव परिणाम में जहां एक ओर भाजपा ने प्रचंड बहुमत हासिल कर दोबारा सत्ता में वापसी की है वहीं समाजवादी पार्टी ने भी इस चुनाव में अपना पिछला प्रदर्शन सुधारा है। कांग्रेस जहां अब प्रदेश में दो विधायकों के साथ तीसरी बड़ी पार्टी बन गई है वहीं बसपा प्रदेश की चौथी पार्टी मात्र एक विधान सभा सीट को जीतकर विधायकों के लिहाज से बनी है। बसपा हो यह सीट पूर्वांचल के बलिया जिले में रसड़ा विधान सभा में हासिल हुई है।

बलिया जिले की रसड़ा सीट पर बसपा से उमाशंकर सिंह को कुल 87089 मत हासिल हुए हैं। उमाशंकर सिंह 2022 में तीसरी बार विधायक निर्वाचित हुए हैं। इस लिहाज से अब यूपी में बसपा का एकमात्र विधायक बलिया जिले के रसड़ा से है। अब वह बसपा की ओर से विधानसभा में अकेले ही मोर्चा संभालेंगे।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक **बबिता चतुर्वेदी** के लिए **4पीएम** आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (यूपी) से मुद्रित एवं प्रकाशित। **प्रधान संपादक**- अर्चना दयाल, **संपादक** - संजय शर्मा, **स्थानीय संपादक** - सूर्यकांत त्रिपाठी*, **वित्तीय सलाहकार**: संदीप बंसल, **कार्टूनिस्ट**: हसन जैदी, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website**: www.4pm.co.in | **RNI-UPHIN/2015/62233** डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।